आपके अवचेतन मन की शक्ति के बेस्टसेलिंग लेखक

धन को आकर्षित कैसे करें

डॉ. जोसेफ़ मर्फ़ी

Hindi translation of *How to Attract Money*

आपके अवचेतन मन की शक्ति के बेस्टसेलिंग लेखक

धन को आकर्षित कैसे करें

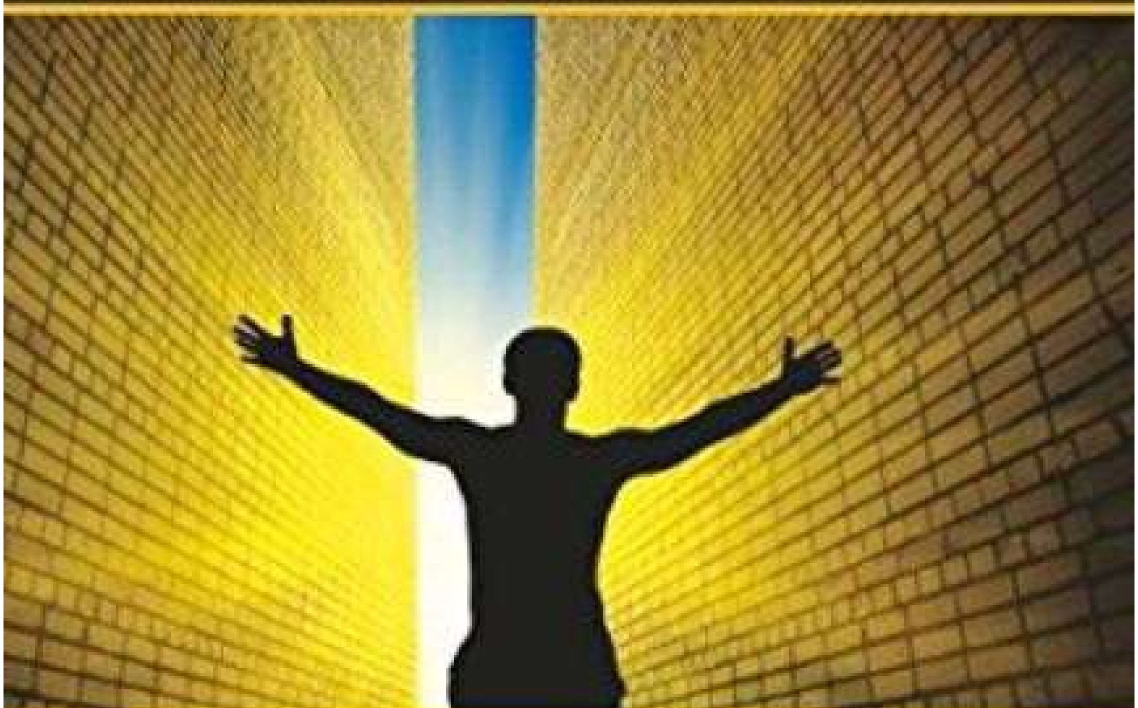

डॉ. जोसेफ़ मर्फ़ी

Hindi translation of *How to Attract Money*

जोसेफ़ मर्फ़ी

धन को आकर्षित कैसे करें

MANJUL
मंजुल पब्लिशिंग हाउस

विषय सूची

1. अमीर बनना आपका अधिकार है

2. अमीरी की राह

3. लेखक के बारे में

अमीर बनना आपका अधिकार है

अमीर बनना आपका अधिकार है। आप यहाँ समृद्ध जीवन बिताने आए हैं। आप यहाँ ख़ुश रहने, दैदीप्यमान बनने और स्वतंत्र होने के लिए आए हैं। इसलिए एक पूर्ण, सुखद और समृद्ध जीवन जीने के लिए आपको जितना पैसा चाहिए, वह आपके पास होना चाहिए।

ग़रीबी में कोई सद्गुण नहीं है। यह एक मानसिक रोग है, जिसका इस पृथ्वी से समूल नाश कर देना चाहिए। आप यहाँ विकास करने आए हैं, विस्तार करने आए हैं और ख़ुद को प्रकट करने आए हैं - आध्यात्मिक दृष्टि से, मानसिक दृष्टि से और भौतिक दृष्टि से। आपके पास इन सारे क्षेत्रों में संपर्ण विकास और अभिव्यक्ति करने का पूरा अधिकार है, जिसे आपसे छीना नहीं जा सकता। आपको ख़ुद को सौंदर्य और विलासिता से घेर लेना चाहिए।

जब आप असीम की दौलत का आनंद ले सकते हैं, तो फिर सीमित पैसों से क्यों संतुष्ट रहें? इस पुस्तक में आप पैसे के साथ दोस्ती करना सीखेंगे और आपके पास हमेशा समृद्धि रहेगी। अमीर बनने की आपकी इच्छा अधिक पूर्ण, अधिक खुश, अधिक अद्भुत जीवन की इच्छा है। यह एक ब्रह्मांडीय आकांक्षा है। यह अच्छी है, बहुत अच्छी है।

धन के सच्चे महत्त्व को देखना शुरू करें: विनिमय के प्रतीक के रूप में। इसका मतलब है अभाव से आज़ादी; इसका मतलब है सौंदर्य, विलासिता, समृद्धि और परिष्कार।

यह अध्याय पढ़ते वक़्त आप शायद कह रहे होंगे, ”में ज़्यादा पैसे चाहता हूँ।“ ”मुझे इस समय जो वेतन मिल रहा है, में उससे ज़्यादा का हक़दार हूँ।“

मेरा मानना है कि ज़्यादातर लोगों को अपर्याप्त वेतन मिलता है। कई लोगों के पास ज़्यादा पैसा नहीं है, इसका एक कारण यह है कि वे मन ही मन या खुलकर इसकी निंदा कर रहे हैं। वे पैसे को ”गंदा पैसा“ कहते हैं या यह मानते हैं कि ”पैसे का प्रेम ही सारी बुराई की जड़ है,“ आदि। वे संपन्न नहीं होते हैं, इसका एक कारण यह है कि उनके मन में यह गोपनीय, अवचेतन भावना रहती है कि ग़रीबी में कोई सद्गुण है। यह अवचेतन भाव बचपन के प्रशिक्षण, अंधविश्वास या धर्मग्रंथों की ग़लत व्याख्या पर आधारित हो सकता है।

ग़रीबी में कोई भी सद्गुण नहीं है। यह किसी भी अन्य मानसिक रोग की तरह एक बीमारी है। अगर आप शारीरिक रूप से बीमार होते हैं, तो आपको लगता है कि आपके साथ कुछ न कुछ गड़बड़ है। ऐसे में आप मदद लेना चाहेंगे और अपनी बीमारी का इलाज करने की कोशिश करेंगे। इसी तरह, अगर आपके जीवन में पर्याप्त धन लगातार प्रवाहित नहीं हो रहा है, तो आपके साथ कोई न कोई बुनियादी गड़बड़ है।

धन सिर्फ़ एक प्रतीक है। इसके विनिमय के रूप सदियों से बदलते रहे हैं, जैसे नमक, मनके और कई प्रकार की लुभावनी चीज़ें। पुराने ज़माने में इंसान की दौलत का पैमाना यह था कि वह कितनी भेड़ों या बैलों का मालिक है। अपने बिलों का भुगतान करने के लिए कुछ भेड़ों को साथ ले जाने के बजाय चेक काटना कहीं ज़्यादा सुविधाजनक है।

ईश्वर नहीं चाहता कि आप किसी दड़बे में रहें या भूखे रहें। ईश्वर चाहता है कि आप ख़ुश, समृद्ध और सफल हों। ईश्वर अपने सभी कामों में हमेशा सफल रहता है, चाहे वह तारा बनाना हो या क़ायनात!

आपकी इच्छा हो सकती है कि आप संसार की सैर करें। या फिर विदेश में कला का अध्ययन करें। या फिर आपके मन में कॉलेज जाने की इच्छा हो सकती है। या किसी श्रेष्ठ स्कूल में अपने बच्चों को भेजने की इच्छा हो सकती है। आप निश्चित रूप से अपने बच्चों को अच्छे परिवेश में पालना चाहते हैं, ताकि वे सौंदर्य, सुव्यवस्था, सुमेल और अनुपात की सराहना करना सीख सकें।

आप सफल होने, जीतने, सारी मुश्किलों को जीतने के लिए पैदा हुए थे। आप अपनी सारी शक्तियों को पूरी तरह विकसित करने के लिए पैदा हुए थे। अगर आपके जीवन में आर्थिक अभाव है, तो इस बारे में कुछ करें।

धन संबंधी सभी अंधविश्वासी मान्यताओं से तुरंत मुक्ति पा लें। कभी भी पैसे को बुरा या गंदा न मानें। अगर आप ऐसा करते हैं, तो पैसे के पंख लग जाएँगे और यह उड़कर आपसे दूर चला जाएगा। याद रखें, आप जिसकी निंदा करते हैं, उसे खो देते हैं।

मिसाल के तौर पर, मान लें कि आपको ज़मीन में सोना, चाँदी, सीसा, ताँबा या लोहा मिलता है। क्या आप इन चीज़ों को बुरा कहेंगे? ईश्वर ने सभी चीज़ों को अच्छा घोषित किया है। बुराई मनुष्य की स्याह समझ, उसके अप्रकाशित मस्तिष्क, जीवन की उसकी झूठी व्याख्या और दैवी शक्ति के उसके दुरुपयोग से आती है। यूरेनियम, सीसे या किसी भी अन्य धातु का इस्तेमाल विनिमय के साधन के रूप में किया जा सकता है। हम नोट या चेक का इस्तेमाल करते हैं। निश्चित रूप से क़ागज़ बुरा नहीं है, न ही चेक है। आज भौतिकशास्त्री और वैज्ञानिक जान चुके हैं कि एक या दूसरी धातु के बीच फ़र्क़ सिर्फ़ इलेक्ट्रॉन्स की संख्या और गति की दर का होता है, जो एक केंद्रीय नाभिक के चारों ओर घूम रहे हैं। वे अब शक्तिशाली साइक्लोट्रॉन्स में परमाणुओं की बमबारी करके एक

धातु को दूसरी में बदल रहे हैं। सोना निश्चित स्थितियों में पारे में बदल जाता है। ऐसा लगता है कि कुछ समय बाद सोना, चाँदी और दूसरी धातुओं को रासायनिक प्रयोगशालाओं में कृत्रिम रूप से बनाया जा सकेगा। मैं इलेक्ट्रॉन्स , न्यूट्रॉन्स , प्रोटॉन्स और आइसोटोप्स में कोई बुराई देखने की कल्पना नहीं कर सकता।

आपकी जेब में रखा क़ागज़ इलेक्ट्रॉन्स और प्रोटॉन्स से बना है, जो अलग तरीक़े से व्यवस्थित हैं; उनकी संख्या और गति की दर अलग है; सिर्फ़ इसी मायने में वह क़ागज़ आपकी जेब में रखी चाँदी से भिन्न है।

कुछ लोग कहेंगे, ”ओह, लोग पैसे के लिए लोगों की जान ले लेते हैं। वे पैसे के लिए चोरी करते हैं!“ यह सच है कि पैसा असंख्य अपराधों से संबद्ध रहा है, लेकिन इससे यह बुरा नहीं बन जाता।

कोई आदमी किसी की जान लेने के लिए किसी दूसरे को 50 डॉलर देता है। उसने एक विनाशकारी उद्देश्य से पैसे का दुरुपयोग किया है। आप बिजली का इस्तेमाल किसी की जान लेने के लिए कर सकते हैं या इससे घर में प्रकाश कर सकते हैं। आप पानी का इस्तेमाल किसी शिशु की प्यास बुझाने के लिए कर सकते हैं या इसमें उसे डुबा भी सकते हैं। आप आग का इस्तेमाल किसी बच्चे को गरमी देने या उसे जलाकर मार डालने के लिए कर सकते हैं।

एक और उदाहरण यह है कि आप अपने बगीचे से मिट्टी लाकर अपने कॉफी के कप में डाल देते हैं। आपने ग़लत किया है, बुराई आपकी है; मिट्टी बुरी नहीं है, न ही कॉफी है। मिट्टी को गलत जगह पर डाला गया है इसकी असली जगह आपका बगीचा है।

इसी तरह, अगर आपके अँगूठे में सुई चुभ जाती है, तो यह बुरी नहीं है। सुई की जगह सुईदान में है, आपके अँगूठे में नहीं।

हम जानते हैं कि प्रकृति की शक्तियाँ या तत्व बुरे नहीं होते। यह तो हमारे इस्तेमाल पर निर्भर करता है कि वे हमें फ़ायदा पहुँचाते हैं या हमारा नुक़सान करते हैं।

एक आदमी ने एक बार मुझसे कहा था, ”मैं दिवालिया हूँ। मुझे पैसा पसंद नहीं है; यह सारी बुराई की जड़ है।“

पैसे का प्रेम अगर बाक़ी सारी चीज़ों से प्रबल होगा, तो आप एकतरफ़ा और असंतुलित हो जाएँगे। आप संसार में अपनी शक्ति या सत्ता का समझदारी से इस्तेमाल करने आए हैं। कुछ लोग शक्ति की चाह रखते हैं; बाक़ी पैसे की। अगर आपका दिल पैसे पर लट्टू हो जाता है और आप कहते हैं, ”बस मैं तो इसी को चाहता हूँ। मैं अपना सारा ध्यान पैसे के संग्रह पर केंद्रित करने जा रहा हूँ; दूसरी कोई चीज़ मायने नहीं रखती,“ तो आप पैसा कमा सकते हैं और दौलत इकट्ठी कर सकते हैं, लेकिन आप भूल रहे हैं कि

आप यहाँ पर एक संतुलित जीवन जीने के लिए आए हैं। "इंसान सिर्फ़ रोटी से ही नहीं जीता है।"

मिसाल के तौर पर, अगर आप किसी सम्प्रदाय या धार्मिक समूह के सदस्य हैं और इसके बारे में कट्टर बन जाते हैं, ख़ुद को अपने दोस्तों, समाज और सामाजिक गतिविधियों से अलग कर लेते हैं, तो आप असंतुलित, अंतर्मुखी और कुंठित हो जाएँगे। प्रकृति संतुलन पर ज़ोर देती है। यदि आपका सारा समय बाहरी चीज़ों और संपत्ति में ही लगा रहे, तो आप मानसिक शांति, मधुर संबंध, प्रेम, ख़ुशी या आदर्श स्वास्थ्य से वंचित हो जाएँगे। आप पाएँगे कि आप कोई भी ऐसी चीज़ नहीं ख़रीद सकते, जो असली है। आप दौलत का संग्रह कर सकते हैं या मिलियनों डॉलर इकट्ठे कर सकते हैं; यह अपने आप में बुरा नहीं है। बुरा तो तब होता है, जब आप हर दूसरी चीज़ से परे सिर्फ़ पैसे से प्यार करें। पैसे से बेइंतहा प्रेम ही कुंठा, निराशा और मोहभंग का परिणाम देता है; इस अर्थ में यह आपकी बुराई की जड़ है।

पैसे को अपना एकमात्र लक्ष्य बनाकर आपने ग़लत चुनाव किया है। आपने सोचा था कि आपको सिर्फ़ यही चाहिए था। लेकिन अपनी तमाम कोशिशों के बाद आपको पता लगा कि आप सिर्फ़ पैसा नहीं चाहिए था। आपको दरअसल जो चीज़ चाहिए थी, वह थी सच्ची जगह, मानसिक शांति और समृद्धि। वैसे अगर आप चाहें, तो आपके पास लाखों-करोड़ों डॉलर होने के बावजूद मानसिक शांति, मधुर संबंध, आदर्श स्वास्थ्य और दैवी अभिव्यक्ति रह सकती है।

हर व्यक्ति पर्याप्त पैसे चाहता है। कोई नहीं चाहता कि उसके पास बस गुज़र-बसर लायक़ ही पैसे रहें। इंसान समृद्धि चाहता है; उसे यह मिलना चाहिए। भोजन, वस्त्र, घर, यातायात के बेहतर साधनों अभिव्यक्ति, प्रजनन और समृद्धि के लिए हमारी जो आकांक्षाएँ, इच्छाएँ और आवेग हैं, वे सब ईश्वर के दिए हैं, दैवी हैं, अच्छे हैं। लेकिन इन आवेगों, इच्छाओं और आकांक्षाओं को हम ग़लत दिशा दे सकते हैं, जिससे हमें अपने जीवन में बुरे या नकारात्मक अनुभव हो सकते हैं।

मनुष्य की प्रकृति बुरी नहीं है; आपमें कोई बुरा स्वभाव नहीं है। यह तो ईश्वर है, शाश्वत प्रज्ञा है, जीवन है, जो आपके ज़रिये अभिव्यक्ति चाह रहा है।

मिसाल के तौर पर, एक लड़का कॉलेज जाना चाहता है, लेकिन उसके पास पर्याप्त पैसे नहीं हैं। वह आस-पास के दूसरे लड़कों को कॉलेज और युनिवर्सिटी जाते देखता है; उसकी इच्छा बढ़ जाती है। वह ख़ुद से कहता है,"में भी कॉलेज में पढ़ना चाहता हूँ।" यह लड़का कॉलेज जाने के उद्देश्य से चोरी कर सकता है या पैसों का गबन कर सकता है। कॉलेज जाने की इच्छा मूलतः अच्छी थी; लेकिन समाज के क़ानूनों, अनुरूपता के वैश्विक नियम या स्वर्णिम नियम की अवहेलना करके उसने इस इच्छा को ग़लत दिशा दे दी; जिससे वह मुश्किल में पड़ गया।

बहरहाल, अगर यह लड़का मन के नियमों को जानता और उसे पता होता कि उसमें कॉलेज जाने के लिए आध्यात्मिक शक्ति का उपयोग करने की पूर्ण क्षमता है, तो वह आज़ाद रहता और जेल नहीं जाता। उसे जेल में किसने डाला? उसने खुद! जिस पुलिस वाले ने उसे जेल में बंद किया, वह इंसानी क़ानूनों का एक प्रतीक था, जिन्हें उसने तोड़ा था। चोरी करके और दूसरों को नुक़सान पहुँचाकर उसने पहले खुद को अपने मन में क़ैद किया। इसके बाद डर और अपराधबोध की चेतना आई। पहले उसके दिमाग़ की क़ैद आई, जिसके बाद ईंट-पत्थर से बनी जेल की दीवारें आईं।

पैसा ईश्वर की संपन्नता, सौंदर्य, परिष्कार और समृद्धि का प्रतीक है। इसका इस्तेमाल असंख्य तरीक़ों से मानवता को लाभ पहुँचाने के लिए समझदारी भरे, विवेकपूर्ण और सृजनात्मक तरीक़े से करना चाहिए। यह किसी देश के आर्थिक स्वास्थ्य का प्रतीक है। जब आपका रक्त स्वतंत्रता से प्रवाहित होता है, तो आप स्वस्थ होते हैं। इसी तरह, जब पैसा आपके जीवन में स्वतंत्रता से प्रवाहित होता है, तो आप आर्थिक दृष्टि से स्वस्थ होते हैं। जब लोग पैसे का संचय करना शुरू करते हैं, इसे पेटी में बंद करके रखने लगते हैं और डर जाते हैं, तो आर्थिक रोग आ जाता है।

1929 में शेयर बाज़ार की भारी गिरावट मनोवैज्ञानिक दहशत का परिणाम थी। डर ने हर जगह लोगों के दिमाग़ को जकड़ लिया था। यह एक तरह का नकारात्मक सम्मोहन था। आप एक व्यक्तिपरक और वस्तुपरक संसार में रह रहे हैं। आपको मानसिक शांति, प्रेम, सौंदर्य, मधुर संबंध, खुशी और हँसी जैसे आध्यात्मिक आहार को नज़रअंदाज़ नहीं करना चाहिए।

आध्यात्मिक शक्ति का ज्ञान सभी तरह की अमीरी के राजमार्ग तक पहुँचने का साधन है, चाहे आपकी इच्छा आध्यात्मिक हो, मानसिक हो या भौतिक हो। मानसिक नियमों या आध्यात्मिक सिद्धांत का विद्यार्थी जानता है और यक़ीन करता है कि आर्थिक स्थिति चाहे जैसी हो, शेयर बाज़ार के उतार-चढ़ाव कैसे भी हों, मंदी हो, हड़तालें हों, युद्ध हों या दूसरी कैसी भी परिस्थितियाँ हों, वह हमेशा समृद्ध रहेगा, चाहे पैसा कोई भी रूप धारण कर ले। इसका कारण यह है कि वह दौलत की चेतना में रहता है। इस विद्यार्थी ने मन में खुद को यक़ीन दिला दिया है कि दौलत उसके जीवन में हमेशा खुलकर प्रवाहित हो रही है और हमेशा दैवी समृद्धि मौजूद है। चाहे कल कोई युद्ध छिड़ जाए और विद्यार्थी की सारी वर्तमान संपत्ति मूल्यहीन हो जाए (जैसा कि प्रथम विश्व युद्ध के बाद जर्मन मार्क के साथ हुआ था), लेकिन इसके बावजूद वह दौलत को आकर्षित करेगा और सृष्टि उसकी परवाह करेगी, चाहे नई मुद्रा कोई भी रूप धारण कर ले।

दौलत चेतना की अवस्था है; यह दैवी आपूर्ति के सतत प्रवाह के प्रति अनुकूलित मस्तिष्क का परिणाम है। वैज्ञानिक चिंतक पैसे या दौलत को ज्वार-भाटे की तरह मानता है; यानि, यह बाहर जाता है, लेकिन यह हमेशा लौटता है। ज्वार-भाटा कभी असफल नहीं होता; न ही मनुष्य की आपूर्ति होती है, बशर्ते वह एक अथक, अपरिवर्तनीय, अमर उपस्थिति पर विश्वास करे, जो सर्वत्र मौजूद है और निरंतर

प्रवाहित हो रही है। जो मनुष्य अवचेतन मन की कार्यप्रणाली जानता है, वह कभी आर्थिक स्थिति, शेयर बाज़ार की दहशत, मुद्रा के अवमूल्यन या मुद्रास्फीति की चिंता नहीं करता है, क्योंकि उसका वास ईश्वर की सतत आपूर्ति की चेतना में है। ऐसे मनुष्य को हमेशा एक विराट उपस्थिति द्वारा आपूर्ति दी जाएगी और उसकी देखभाल की जाएगी। "हवा में उड़ते पक्षियों को देखो: क्योंकि वे बोते नहीं हैं, न ही वे काटते हैं, न ही वे खलिहानों में संग्रह करते हैं; लेकिन तुम्हारा ईश्वर में बैठा पिता उन्हें भोजन कराता है। क्या तुम उनसे बेहतर नहीं हो?"

जब आप दैवी उपस्थिति के साथ चेतन रूप से बातचीत करते हैं, दावा करते हैं और जानते हैं कि यह सभी तरीक़ों से आपका नेतृत्व और मार्गदर्शन करती है, कि यह आपके पैरों के लिए एक मशाल की तरह है, कि यह आपकी राह की रोशनी है, तो आप दैवी रूप से समृद्ध होंगे और अपने सबसे बड़े सपनों से भी ज़्यादा सफल होंगे।

सतत आपूर्ति या दौलत के विचार को अपने अवचेतन मन पर अंकित करने का एक सरल तरीक़ा यह है: अपने मन के पहियों को रोक दें। शिथिल हो जाएँ! छोड़ दें! ध्यान को गतिहीन कर दें। मन की एक उनींदी, ध्यान अवस्था में चले जाएँ; इससे प्रयास न्यूनतम हो जाता है। फिर एक शांत, शिथिल, निष्क्रिय तरीक़े से इन सरल सच्चाइयों पर विचार करें: ख़ुद से पूछें कि विचार कहाँ से आते हैं? दौलत कहाँ से आती है? आप कहाँ से आए थे? आपका मन कहाँ से आया था? आपको एक ही स्त्रोत की ओर ले जाया जाएगा।

आप अब ख़ुद को एक आध्यात्मिक, कार्यकारी आधार पर पाते हैं। अब आपको यह एहसास अपनी बुद्धिमानी का अपमान नहीं लगेगा कि दौलत एक मानसिक अवस्था है। आगे बताए छोटे वाक्य को दिन में तीन-चार बार ख़ुद से धीरे-धीरे कहें, ख़ास तौर पर सोने जाने से पहले: "पैसा मेरे जीवन में हमेशा खुलकर प्रवाहित हो रहा है और मेरे पास हमेशा दैवी समृद्धि है।" जब आप ऐसा नियमित और सुनियोजित तरीक़े से करते हैं, तो दौलत का विचार आपके ज़्यादा गहरे यानि अवचेतन मन तक पहुँच जाएगा और आप दौलत की चेतना विकसित कर लेंगे। अविचारित या मशीनी दोहराव से दौलत की चेतना बनने में सफलता नहीं मिलेगी। आप जो भी कह रहे हैं, उसकी सच्चाई महसूस करें। आप जानते हैं कि आप क्या कर रहे हैं और क्यों कर रहे हैं। आप जानते हैं कि आप जिसे चेतन रूप से सच मानते हैं, आपका ज़्यादा गहरा मन उस पर प्रतिक्रिया करेगा।

जो लोग आर्थिक मुश्किलों में फँसे हुए हैं, उन्हें शुरुआत में इस तरह के कथनों से परिणाम नहीं मिलते हैं, जैसे "मैं दौलतमंद हूँ," "मैं समृद्ध हूँ," "मैं सफल हूँ।" उल्टे, ऐसे कथनों से हालात बदतर भी हो सकते हैं। इसका कारण यह है कि अवचेतन मन दो विचारों में से ज़्यादा प्रबल विचार, मनोदशा या भावना को ही स्वीकार करेगा। जब वे कहते हैं, "मैं दौलतमंद हूँ," तो उनकी अभाव की भावना ज़्यादा बड़ी है और उनके भीतर से आवाज़ आती है, "नहीं, तुम दौलतमंद नहीं हो; तुम तो कंगाल हो।" अभाव की भावना ज़्यादा प्रबल है, इसलिए हर कथन अभाव की मनोदशा को जाग्रत करता है

और इस वजह से उनका अभाव बढ़ जाता है। इससे उबरने के लिए शुरुआत में लोगों को ऐसी बात कहनी चाहिए, जो उनके चेतन और अवचेतन मन दोनों को स्वीकार हो; तब कोई विरोध नहीं रहेगा। हमारा अवचेतन मन हमारी मान्यताओं, भावनाओं, विश्वासों को स्वीकार करता है। यह उसे स्वीकार करता है, जिसे हम चेतन रूप से सच मानते हैं।

एक आदमी यह कहकर अपने अवचेतन मन का सहयोग हासिल कर सकता है, ”मैं हर दिन समृद्ध हो रहा हूँ।“ ”हर दिन मेरी दौलत और बुद्धिमानी बढ़ रही है।“ ”हर दिन मेरी दौलत बढ़ रही है।“ ”मैं आर्थिक दृष्टि से तरक्की कर रहा हूँ, विकास कर रहा हूँ और आगे बढ़ रहा हूँ।“ इन कथनों से मन में कोई संघर्ष उत्पन्न नहीं होगा।

मिसाल के तौर पर, अगर किसी सेल्समैन की जेब में सिर्फ़ दस सेंट हैं, तो वह आसानी से यह स्वीकार कर सकता है कि कल उसके पास ज़्यादा पैसे हो सकते हैं। अगर उसने कल एक जोड़ी जूते बेचे थे, तो उसके भीतर ऐसा कुछ नहीं है जो कहे कि उसकी बिक्री नहीं बढ़ सकती। वह इस प्रकार के कथनों का इस्तेमाल कर सकता है, ”मेरी बिक्री हर दिन बढ़ रही है।“ ”मैं तरक्की कर रहा हूँ और आगे बढ़ रहा हूँ।“ वह पाएगा कि ये मनोवैज्ञानिक रूप से ठोस हैं। उसका मन इन कथनों को सच मान लेगा और उसे मनचाहा फल देगा।

आध्यात्मिक रूप से उन्नत जो विद्यार्थी शांति से, जानते हुए और भावना के साथ कहते हैं, ”मैं संपन्न हूँ,“ ”मैं सफल हूँ,“ ”मैं दौलतमंद हूँ,“ उन्हें भी अद्भुत परिणाम मिलेंगे। ऐसा क्यों होगा? जब वे सोचते, महसूस करते या कहते हैं, ”मैं संपन्न हूँ,“ तो उनका मतलब होता है कि ईश्वर के पास सारी आपूर्ति या असीम अमीरी है; और जो ईश्वर के लिए सच है, वह उनके लिए भी सच है। जब वे कहते हैं, ”मैं दौलतमंद हूँ,“ तो वे जानते हैं कि ईश्वर असीम आपूर्ति है, अकूत ख़ज़ाना है और जो ईश्वर के बारे में सच है, वह उनके बारे में भी सच है, क्योंकि ईश्वर उनके भीतर वास करता है।

कई लोग स्वास्थ्य, दौलत और सफलता जैसे तीन अमूर्त विचारों पर मनन करके अद्भुत परिणाम पाते हैं। स्वास्थ्य एक दैवी सच्चाई या ईश्वरीय गुण है। दौलत ईश्वर की है; यह शाश्वत और अंतहीन है। सफलता ईश्वर की है; ईश्वर हमेशा अपने सभी कामों में सफल होता है।

इनसे उल्लेखनीय परिणाम पाने के लिए वे दाढ़ी बनाते वक़्त एक आईने के सामने खड़े होकर पाँच-दस मिनट तक ख़ुद से कहते रहते हैं : ”स्वास्थ्य, दौलत आैर सफलता।“ वे यह नहीं कहते, ”मैं स्वस्थ हूँ,“ या ”मैं सफल हूँ।“ वे अपने मन में कोई विरोध उत्पन्न नहीं करते। वे शांत और शिथिल होते हैं; इस तरह मन ग्रहणशील और निष्क्रिय होता है; इसी अवस्था में वे ये शब्द दोहराते हैं। इससे आश्चयर्ज नक परिणाम मिलते हैं। दरअसल वे उन सत्यों के साथ तादात्म्य स्थापित कर रहे है, जो शाश्वत, अपरिवर्तनीय आैर अमर हैं।

आप दौलत की चेतना विकसित कर सकते हैं। इस पुस्तक में वर्णित और विस्तार से बताए सिद्धांतों पर अमल करें; आपके रेगिस्तान में भी गुलाब के फूल खिल जाएँगे और यह महकने लगेगा।

में ने कई साल पहले ऑस्ट्रेलिया के एक किशोर के साथ काम किया था। यह किशोर डॉक्टर और सर्जन बनना चाहता था, लेकिन उसके पास पैसा नहीं था; न ही उसने हाई स्कूल की पढ़ाई पूरी की थी। ख़र्च निकालने के लिए वह डॉक्टरों के ऑफिस साफ़ करता था, खिड़कियाँ धोता था और मरम्मत के छुटपुट काम करता था। उसने मुझे बताया कि हर रात जब वह सोने जाता था, तो वह दीवार पर टँगे डॉक्टर के डिप्लोमा का चित्र देखता था, जिसमें उसका नाम बड़े-बड़े अक्षरों में लिखा था। वह जहाँ काम करता था, वहाँ वह डिप्लोमाओं को साफ़ करता और चमकाता था, इसलिए उसे मन में डिप्लोमा की तस्वीर देखना या उसकी कल्पना करना मुश्किल नहीं था। में नहीं जानता कि उसने इस तस्वीर को देखना कितने समय तक जारी रखा, लेकिन उसने यह कुछ महीनों तक किया होगा।

जब वह लगन से जुटा रहा, तो परिणाम मिले। एक डॉक्टर इस लड़के को बहुत पसंद करने लगा। उस डॉक्टर ने उसे औज़ारों को कीटाणुरहित करने, इंजेक्शन लगाने और प्राथमिक चिकित्सा के दूसरे कामों की कला का प्रशिक्षण दिया। वह किशोर उस डॉक्टर के ऑफिस में तकनीकी सहयोगी बन गया। डॉक्टर ने उसे अपने ख़र्च पर हाई स्कूल और बाद में कॉलेज भी भेजा।

आज वह किशोर मॉन्ट्रियल, कैनेडा का एक शीर्षस्थ डॉक्टर है। उसके पास एक सपना था! उसके मन में एक स्पष्ट तस्वीर थी! उसकी दौलत उसके दिमाग़ में थी।

दौलत आपका विचार, इच्छा, गुण, सेवा की चाहत, मानव जाति को देने की क्षमता, समाज के लिए उपयोगी बनने की योग्यता और आम तौर पर मानवता के प्रति आपका प्रेम है।

उस लड़के ने अचेतन रूप से एक महान नियम से फ़ायदा उठाया। ट्रॉवर्ड कहते हैं, ”लक्षय को देखकर आप उसकी प्राप्ति के साधनों की इच्छा कर लेते हैं।“ इस लड़के के मामले में लक्षय डॉक्टर बनना था। उसने डॉक्टर बनने की कल्पना की, इसका चित्र देखा, इसकी सच्चाई को महसूस किया। इस विचार को लगातार क़ायम रखकर, उसे पोषण देकर और उससे प्रेम करके उसने अपनी कल्पनाशक्ति के ज़रिये इसे अवचेतन की परतों के पार पहुँचा दिया। तब यह एक विश्वास बन गया और इसने उसके सपनों को हक़ीक़त में बदलने की राह दिखाई।

वह यह कह सकता था, ”मेरे पास कोई शिक्षा नहीं है।“ ”में सही लोगों को नहीं जानता।“ ”अब में इतना बड़ा हो चुका हूँ कि स्कूल नहीं जा सकता।“ ”मेरे पास पैसे नहीं हैं; इसमें कई साल लग जाएँगे और में बुद्धिमान नहीं हूँ।“ अगर वह इस तरह की बातें

कहता, तो शुरू करने से पहले ही हार जाता। उसकी दौलत उसकी आंतरिक आध्यात्मिक शक्ति के इस्तेमाल में निहित थी, जिसने उसके विचार पर प्रतिक्रिया की।

हमारी प्रार्थनाओं का किस साधन या तरीक़े से जवाब मिलता है, यह हमेशा हमसे छिपा रहता है। कभी-कभार हम बस अंतर्बोध से प्रक्रिया के एकाध हिस्से को समझ सकते हैं। "मेरे तरीक़ों का पता नहीं लगाया जा सकता।" तरीक़े मालूम नहीं होते। मनुष्य तो बस कल्पना कर सकता है और अपने मन में लक्ष्य को स्वीकार कर सकता है। इस लक्ष्य को कैसे प्राप्त किया जाएगा, यह उसे अपने भीतर की व्यक्तिपरक बुद्धिमत्ता के भरोसे छोड़ना होता है।

अक्सर यह सवाल पूछा जाता है, "लक्ष्य पर मनन करने और चेतना में इच्छा को स्वीकार करने के बाद मुझे क्या करना चाहिए?" जवाब सरल है: जो भी आपके लक्ष्य को पाने के लिए आवश्यक होगा, उसे करने के लिए आपको विवश किया जाएगा। अवचेतन का नियम है विवशता। जीवन का नियम है क्रिया और प्रतिक्रिया। हम जो भी क्रिया करते हैं, वह हमारे मन की आंतरिक गतिविधियों, आंतरिक भावों और विश्वासों पर स्वचालित प्रतिक्रिया होती है।

कुछ महीनों पहले जब में सोने गया, तो में ने कल्पना की कि में अपनी एक लोकप्रिय पुस्तक मैजिक ऑफ़ फ़ेथ को फ़रांसिसी भाषा में पढ़ रहा हूँ। में ने यह कल्पना की कि यह पुस्तक सभी फ़रांसिसी बोलने वाले देशों में पढ़ी जा रही है। कई सप्ताह तक में ने हर रात यही किया और अपने हाथों में मैजिक ऑफ़ फ़ेथ के काल्पनिक फ़रांसिसी संस्करण को थामने के चित्र के साथ सोने गया।

1954 में क्रिसमस के ठीक पहले मुझे पैरिस के एक अग्रणी प्रकाशक का पत्र मिला, जिसने एक अनुबंध भी साथ भेजा था। पत्र में लिखा था कि में उस अनुबंध पर हस्ताक्षर कर दूँ और उसे मैजिक ऑफ़ फ़ेथ के फ़रांसिसी संस्करण को प्रकाशित करने तथा फ़रांसिसी भाषा बोलने वाले सभी देशों में उसे प्रचारित करने की अनुमति दूँ।

आप मुझसे पूछ सकते हैं कि प्रार्थना के अलावा में ने इस पुस्तक के प्रकाशन के बारे में क्या किया? में कहूँगा, "कुछ नहीं!" उसके बाद तो व्यक्तिपरक प्रज्ञा ने कमान थाम ली थी और अपने तरीक़े से यह कर दिया था, जो मेरे चेतन रूप से सोचे किसी भी तरीक़े से कहीं बेहतर था।

हमारी सारी बाहरी गतिविधियाँ और क्रियाएँ मन की आंतरिक गतिविधियों का अनुसरण करती हैं। आंतरिक क्रिया सभी बाहरी क्रियाओं से पहले होती है। आप शारीरिक रूप से जो भी क़दम उठाते हैं या आप वस्तुपरक तरीक़े से जो भी करते नज़र आते हैं, वह सब एक नक़्शे का हिस्सा होता है, जिसे पूरा करने के लिए आप विवश होते हैं।

लक्ष्य को स्वीकार करने से लक्ष्य की प्राप्ति के साधन अपने आप आ जाते हैं।

यक़ीन करें कि मनचाही चीज़ इसी समय आपके पास है और आप इसे पा लेंगे।

हमें अपनी भलाई से इंकार करना छोड़ना होगा। अहसास करें कि एक ही चीज़ है, जो हमें उस अमीरी से दूर रखती है, जो हमारे चारों ओर फैली है। यह एकमात्र चीज़ है हमारा मानसिक नज़रिया। यह एकमात्र चीज़ है ईश्वर, जीवन और संसार को देखने का हमारा दृष्टिकोण। इस सकारात्मक सत्य को जान लें, इस पर विश्वास करें और इसके अनुरूप काम करें: आप ईश्वर के महान नियमों के ज़रिये जो भी हासिल करना चाहते हैं, वह पा सकते हैं, बन सकते हैं, कर सकते हैं।

आपका मन कैसे काम करता है, इसका ज्ञान आपका रक्षक और मुक्तिदाता है। विचार और भावना आपकी तक़दीर हैं। आप चेतना के अधिकार द्वारा हर चीज़ के मालिक हैं। स्वास्थ्य की चेतना स्वास्थ्य उत्पन्न करती है; दौलत की चेतना दौलत उत्पन्न करती है। वैसे यह ध्यान रखें कि आप जिसके लिए प्रार्थना करते हैं, उससे संसार इंकार या विरोध करता नज़र आ सकता है। कई बार तो आपकी इंद्रियाँ भी आप पर हँसती नज़र आएँगी।

अगर आप अपने मित्र को यह बताएँ कि आप अपना नया कारोबार शुरू करने जा रहे हैं, तो वह तमाम कारण गिनाने लगेगा कि आपका असफल होना क्यों तय है। यदि आप उसके सम्मोहन के जाल में फँस जाते हैं, तो इससे आपके मन में असफलता का डर बैठ सकता है। लेकिन जब आप आध्यात्मिक शक्ति के बारे में जागरूक होते हैं, जो एक है, अखंड है और आपके विचार पर प्रतिक्रिया करती है, तो आप संसार के अंधकार और अज्ञान को अस्वीकार कर देंगे। तब आप यह समझ जाएँगे कि आपके पास सफल होने के सारे औज़ार, शक्ति और ज्ञान है।

अमीरी के राजमार्ग पर चलने के लिए आपको दूसरों की राह में रोड़े या बाधाएँ नहीं रखनी चाहिए; न ही दूसरों के प्रति ईर्ष्या या डाह रखनी चाहिए। दरअसल, इन नकारात्मक भावों को प्रश्रय देकर आप ख़ुद को ही चोट और नुक़सान पहुँचा रहे हैं, क्योंकि आप ही तो हैं, जो इसे सोच रहे हैं, महसूस कर रहे हैं। जैसा क्विम्बी ने कहा था, ”आप किसी दूसरे को जो सुझाव देते हैं, वह आप ख़ुद को दे रहे हैं।“ इस वजह से स्वर्णिम नियम एक ब्रह्मांडीय और दैवी नियम है।

मुझे यक़ीन है, आपने लोगों को यह कहते सुना होगा, ”इस आदमी का गोरखधंधा है।“ ”वह एक ठग है।“ ”वह बेईमानी से पैसे कमा रहा है।“ ”वह धोखेबाज़ है।“ ”मैं उसे तब जानता था, जब उसके पास कुछ नहीं था।“ ”वह कुटिल है, चोर है और दग़ाबाज़ है।“ अगर आप यह बोलने वाले आदमी का विश्लेषण करते हैं, तो आप पाते हैं कि वह आम तौर पर अभाव में है या किसी आर्थिक अथवा शारीरिक बीमारी का शिकार है। शायद कॉलेज के उसके पुराने मित्र सफलता की सीढ़ी पर ऊपर पहुँच गए और उससे ज़्यादा अच्छी स्थिति में पहुँच गए; उनकी प्रगति देखकर वह कटु और ईर्ष्यालु हो गया है। कई मामलों में यही उसके पतन का कारण होता है।

इन सहपाठियों के बारे में नकारात्मक तरीक़े से सोचने और उनकी दौलत की निंदा करने का नतीजा यह होता है कि जिस दौलत और समृद्धि के लिए वह प्रार्थना कर रहा है, वह ग़ायब हो जाती है और दूर चली जाती है। वह जिन चीज़ों के लिए प्रार्थना कर रहा है, दरअसल उन्हीं की निंदा कर रहा है। वह दोतरफ़ा प्रार्थना कर रहा है। एक तरफ़ तो वह कह रहा है, "ईश्वर मुझे समृद्ध बना रहा है," और अगली ही साँस में मन ही मन या ज़ोर से वह कह रहा है, "मैं उस आदमी की दौलत से द्वेष करता हूँ।" हमेशा दूसरे व्यक्ति को दुआ दें, हमेशा उसकी समृद्धि और सफलता पर खुश हों; ऐसा करके आप खुद को दुआ देते हैं और समृद्ध बनाते हैं।

अगर आप बैंक जाते हैं और देखते हैं कि सड़क पार वाला आपका प्रतिस्पर्धी आपसे बीस गुना ज़्यादा पैसे जमा करा रहा है या आप उसे दस हज़ार डॉलर जमा करते देखें, तो खुश हों। यह देखकर बहुत खुश हों कि ईश्वर की समृद्धि उसके एक पुत्र के माध्यम से प्रकट हो रही है। तब आप उस चीज़ को दुआ दे रहे हैं और बढ़ा रहे हैं, जिसके लिए आप प्रार्थना कर रहे हैं। आप जिसे दुआ देते हैं, वह कई गुना होता है। आप जिसकी निंदा करते हैं, उसे आप गँवा देते हैं।

अगर आप किसी बड़ी कंपनी में काम कर रहे हों और इस बारे में सोच रहे हों या चिढ़ रहे हों कि आपको कम तनख़्वाह मिलती है, आपको सम्मान नहीं दिया जाता और आप अधिक धन तथा मान्यता के हक़दार हैं, तो आप अचेतन रूप से उस संगठन के साथ अपने बंधनों को तोड़ रहे हैं। आप एक नियम को सक्रिय कर रहे हैं। फिर सुपरिंटेंडेंट या मैनेजर आपसे कहता है, "हमें आपको निकालना होगा।" दरअसल, आपने खुद को निकाला था। मैनेजर तो बस एक ज़रिया था, जिसने आपकी नकारात्मक मानसिक अवस्था की पुष्टि की। दूसरे शब्दों में, वह एक संदेशवाहक था, जो आपको वही बता रहा था, जो आपने अपने बारे में सच माना था। यह क्रिया और प्रतिक्रिया के नियम का एक उदाहरण था। क्रिया आपके दिमाग़ की आंतरिक गतिविधि थी; प्रतिक्रिया आपकी अंदरूनी सोच को सही साबित करने के लिए बाहरी जगत की प्रतिक्रिया थी।

शायद इसे पढ़ते वक़्त आप किसी ऐसे व्यक्ति के बारे में सोच रहे होंगे, जो दूसरों से लाभ उठाकर, उन्हें धोखा देकर या ख़राब निवेश बेचकर आर्थिक दृष्टि से समृद्ध बना हो। इसका जवाब स्पष्ट है, क्योंकि अगर हम किसी दूसरे को लूटते हैं, धोखा देते हैं या फ़ायदा उठाते हैं, तो हम खुद के साथ भी यही करते हैं। वास्तव में, इस मामले में हम खुद को ही चोट पहुँचा रहे हैं या लूट रहे हैं। पहली बात तो यह है कि इससे हम अभाव की मनोदशा में रहते हैं, जिससे नुक़सान का हमारी ओर आकर्षित होना तय होता है। यह नुक़सान कई तरीक़ों से हो सकता है; यह स्वास्थ्य, प्रतिष्ठा, मानसिक शांति, सामाजिक ओहदे, घर में बीमारी या कारोबार में कंगाली के रूप में आ सकता है। ज़रूरी नहीं है कि नुक़सान सिर्फ़ आर्थिक हानि के रूप में ही आए। हमें अदूरदर्शी नहीं होना चाहिए और यह नहीं सोचना चाहिए कि नुक़सान सिर्फ़ डॉलर और सेंट में ही होगा।

क्या यह अद्भुत भाव नहीं है कि आप जब रात को तकिए पर सिर रखें, तो पूरे

संसार के साथ शांतिमय महसूस करें और आपका दिल सबके प्रति सद्भाव से भरा हो? कुछ लोग हैं, जिन्होंने ग़लत तरीक़े से, दूसरों को कुचलकर, धोखा करके, छल से और कपट से पैसा इकट्ठा किया है। इसकी क़ीमत क्या है? कई बार तो यह क़ीमत मानसिक और शारीरिक रोग की होती है, कई बार अपराधबोध की ग्रंथियों, अनिद्रा या छिपे हुए डरों की होती है। जैसा एक आदमी ने मुझे बताया था, "हाँ, मैं दूसरों को कुचलकर आगे बढ़ा था। मैं जो चाहता था, वह तो मुझे मिल गया, लेकिन इस चक्कर में मुझे कैंसर भी मिल गया।" उसे अहसास था कि उसने ग़लत तरीक़े से दौलत हासिल की थी।

आप किसी को चोट पहुँचाए बिना दौलतमंद और समृद्ध बन सकते हैं। कई लोग ख़ुद को लगातार लूट रहे हैं; वे ख़ुद से ही चुरा रहे हैं: मानसिक शांति, स्वास्थ्य, ख़ुशी, प्रेरणा, ख़ुशी और ईश्वर की हँसी। हालाँकि वे कह सकते हैं कि उन्होंने कभी चोरी नहीं की, लेकिन क्या यह सच है? हर बार जब हम किसी से द्वेष करते हैं या ईर्ष्या करते हैं या किसी दूसरे की दौलत या सफलता पर जलते हैं, तो दरअसल हम ख़ुद से चुरा रहे हैं। ये वे चोर-डाकू हैं, जिन्हें ईसा मसीह ने मंदिर से बाहर निकाल दिया था। इसी तरह आपको भी उन्हें निर्णायक रूप से बाहर निकाल देना चाहिए। उन्हें अपने मन में न रहने दें। सही विचार और भावना की तलवार से उनकी गर्दन काट दें।

मैं ने युद्ध के शुरुआती दिनों में ब्रुकलिन, न्यू यार्क की एक महिला के बारे में पढ़ा था, जो इस स्टोर से उस स्टोर तक जाकर सारी उपलब्ध कॉफी ख़रीदती थी। वह जानती थी कि कॉफी की कमी होने वाली है। उसके मन में यह डर भरा था कि हो सकता है कि उसे पर्याप्त कॉफी न मिले। इसलिए वह जितनी कॉफी ख़रीद सकती थी, उतनी उसने ख़रीद ली और उसे अपनी कोठरी में भर लिया। उस शाम वह चर्च गई। जब वह घर लौटी, तो उसने पाया कि चोरों ने दरवाज़ा तोड़ दिया था और न सिर्फ़ उसकी कॉफी चुरा ली, बल्कि चाँदी के बर्तन, पैसे, गहने और दूसरा सामान भी चुरा ले गए।

इस भली महिला ने वही कहा, जो इस तरह के सभी लोग कहते हैं, "यह मेरे साथ क्यों हुआ, जब मैं चर्च में थी? मैं ने तो कभी किसी का कुछ नहीं चुराया।"

क्या यह सच है? जब उसने कॉफी का संचय शुरू किया था, तब क्या वह अभाव और डर की चेतना में नहीं थी? उसकी मनोदशा और अभाव का डर इतना प्रबल था कि उसके घर तथा संपत्तियों को नुक़सान पहुँचा दे। इसके लिए उसे किसी स्टोर की तिजोरी में हाथ डालने या बैंक लूटने की ज़रूरत नहीं थी; उसके अभाव के डर ने अभाव उत्पन्न कर दिया। यही कारण है कि कई ऐसे लोग भी नुक़सान उठाते हैं, जिन्हें समाज "अच्छा नागरिक" कहता है। वे सांसारिक संदर्भ में अच्छे हैं, यानि वे अपने टैक्स चुकाते हैं, क़ानून का पालन करते हैं, नियमित रूप से वोट देते हैं और परोपकारी संस्थाओं के प्रति उदारता दिखाते हैं, लेकिन वे दूसरों की संपत्तियों, उनकी दौलत या सामाजिक ओहदे के प्रति द्वेष रखते हैं। जब कोई देख न रहा हो, तब अगर वे पैसे उठाना चाहें, तो ऐसा नज़रिया निश्चित रूप से अभाव की अवस्था दर्शाता है। इससे वह व्यक्ति ऐसी मानसिक अवस्था में आ जाता है, जो उन धोखेबाज़ों को आकर्षित करती है, जो किसी कारोबारी सौदे में उसे

धोखा दे सकते हैं या चूना लगा सकते हैं।

बाहरी चोर के लूटने से पहले हमने खुद को लूटा है। बाहरी चोर के आने से पहले आंतरिक चोर का होना अनिवार्य है।

हो सकता है कि किसी व्यक्ति में अपराधबोध की ग्रंथि हो और वह खुद को निरंतर दोष दे। मैं एक ऐसे ही व्यक्ति को जानता हूँ। वह एक बैंक में रोकड़िया था और बहुत ईमानदार था। उसने कभी पैसा नहीं चुराया, लेकिन उसका एक अवैध प्रेमप्रसंग चल रहा था। वह एक रखैल को सहारा दे रहा था और अपने परिवार को वंचित रख रहा था। वह इस डर में जी रहा था कि उसका भेद खुल जाएगा। फलस्वरूप उसके मन में अपराधबोध का गहरा अहसास पलने लगा। अपराधबोध के बाद डर आता है। डर की वजह से मांसपेशियाँ और श्लेष्म झिल्लियाँ सिकुड़ जाती हैं। उसे गंभीर साइनसाइटिस हो गया। दवाओं से सिर्फ़ अस्थायी राहत ही मिल पाई।

मैं ने उस आदमी को उसकी परेशानी का असल कारण बताया और उससे कहा कि इसका बस यही इलाज है कि वह अपने विवाहेतर प्रेमप्रसंग को ख़त्म कर दे। उसने कहा कि वह ऐसा नहीं कर सकता। उसने कहा कि वह औरत उसकी आत्मा की सहचरी है और वह पहले ही यह कोशिश करके देख चुका है। इसके लिए वह हमेशा खुद को दोष दे रहा था और अपनी निंदा कर रहा था।

एक दिन बैंक के एक अधिकारी ने उस पर पैसों के गबन का आरोप लगा दिया। मामला संगीन दिख रहा था, क्योंकि परिस्थितिजन्य प्रमाण मौजूद था। रोकड़िया दहशत में आ गया और उसे अहसास हुआ कि उस पर आरोप लगाए जाने का एकमात्र कारण यही था कि वह खुद पर आरोप लगा रहा था और अपनी निंदा कर रहा था। वह समझ गया कि मस्तिष्क इसी तरह काम करता है। जब तक वह मन में खुद पर आरोप लगाता रहेगा, बाहरी संसार में भी उस पर आरोप लगाए जाएँगे।

गबन के आरोप के सदमे की वजह से उसने दूसरी औरत के साथ तुरंत संबंध तोड़ लिए और अपने तथा बैंक अधिकारी के बीच समझ और दैवी मधुर संबंध के लिए प्रार्थना करने लगा। वह यह दावा करने लगा, "कुछ भी छिपा नहीं है, जो प्रकट न हो। ईश्वर की शांति सभी संबंधित मस्तिष्कों और हृदयों में सर्वोच्च विराजमान है।"

सच्चाई की जीत हुई। सच्चाई के प्रकाश में सारा मामला साफ़ हो गया। एक और युवक का पता चला, जो अपराधी था। बैंक का रोकड़िया जानता था कि सिर्फ़ प्रार्थना की वजह से ही वह जेल जाने से बचा था।

महान नियम है, "जैसा आप चाहते हैं कि लोग आपके बारे में सोचें, उनके बारे में भी वैसा ही सोचो। जैसा आप चाहते हैं कि लोग आपके बारे में महसूस करें, उनके बारे में भी वैसा ही महसूस करो।"

शिद्दत से कहें, ”में इस पृथ्वी पर चलने वाले हर इंसान के लिए जो चाहता हूँ, वही में ख़ुद के लिए भी चाहता हूँ। मेरे दिल की सच्ची इच्छा यह है कि हर जगह सभी लोगों को शांति, प्रेम, ख़ुशी, समृद्धि और ईश्वर के वरदान मिलें।“ सभी लोगों की प्रगति, तरक्की और समृद्धि में आनंदित व ख़ुश हों। जो भी आप अपने लिए सच करना चाहते हों, उसे हर जगह सभी लोगों के लिए सही मानें। अगर आप ख़ुशी और मानसिक शांति के लिए प्रार्थना करते हैं, तो सभी के लिए शांति और ख़ुशी का दावा करें। किसी दूसरे को कभी किसी ख़ुशी से वंचित करने की कोशिश न करें। अगर आप ऐसा करते हैं, तो आप ख़ुद को वंचित करते हैं। जब पैसा आपके मित्र के पास आता है, तो यह आपके पास भी आता है।

यदि आपकी कंपनी में किसी की तरक्की होती है, तो आनंदित और ख़ुश हों। उसे बधाई दें। उसकी तरक्की और प्रतिष्ठा पर प्रसन्न हों। अगर आप क्रोधित या द्वेषपूर्ण हैं, तो आप ख़ुद को नीचे धकेल रहे हैं। किसी को भी ख़ुशी, सफलता, उपलब्धि, समृद्धि और सारी अच्छी चीज़ों के उसके ईश्वर-प्रदत्त जन्मसिद्ध अधिकार से वंचित करने की कोशिश न करें।

ईसा मसीह ने कहा था, ”ख़ुद के लिए स्वर्ग में ख़ज़ानों का संग्रह करें, जहाँ दीमक और जंग उन्हें नुक़सान नहीं पहुँचाती है, जहाँ चोर सेंध लगाकर चुरा नहीं सकते हैं।“ नफ़रत और द्वेष दिल को कुतर लेते हैं तथा उसमें जंग लगा देते हैं। फलस्वरूप हमारे भीतर दाग़, अशुद्धियाँ, ज़हरीले पदार्थ और विष भर जाते हैं।

स्वर्ग के ख़ज़ाने ईश्वर की सच्चाइयाँ हैं, जो हमारी आत्मा में मौजूदा हैं। अपने मन को शांति, मधरु संबंध, आस्था, ख़ुशी, ईमानदारी, अखंडता, प्रेमपूर्ण दयालुता और नम्रता से भर लें; फिर आप अपने मन के स्वर्ग में अपने ख़ज़ानों के बीज बो देंगे।

अगर आप निवेश संबंधी बुद्धिमत्ता की तलाश कर रहे हैं या अगर आप अपने शेयरों या ब्रॉन्ड के बारे में चिंतित हों, तो शांति से दावा करें, ”असीम प्रज्ञा मेरे सभी आर्थिक सौदों को शासित करती है और उन पर नज़र रखती है, इसलिए में जो भी करता हूँ, समृद्ध होगा।“ इसे बार-बार करें और आपके निवेश समझदारीपूर्ण होंगे। यही नहीं, आपकी नुक़सान से भी रक्षा होगी, क्योंकि नुक़सान होने से पहले ही आपको शेयर बेचने के लिए प्रेरित कर दिया जाएगा।

अपने मकान, कारोबार और संपत्तियों के बारे में नीचे वाली प्रार्थना का हर दिन इस्तेमाल करें: ”जो सर्वोच्च शक्ति ग्रहों की कक्षा में उनका मार्गदर्शन करती है और जिसकी बदौलत सूरज चमकता है, वह मेरी सारी संपत्तियों, घर, कारोबार और मेरी सारी चीज़ों पर निगाह रखती है। ईश्वर ही मेरा किला और तिजोरी है। मेरी सारी संपत्तियाँ ईश्वर में सुरक्षित हैं। यह अद्भुत है।“ हर दिन ख़ुद को इस महान सच्चाई की याद दिलाएँगे और प्रेम के नियमों पर चलेंगे, तो आपको सभी तरीक़ों से मार्गदर्शन मिलेगा, आपका ध्यान रखा जाएगा और आपको समृद्ध बनाया जाएगा। आपको कभी नुक़सान

नहीं उठाना पड़ेगा, क्योंकि आपने सर्वशक्तिमान को अपना सलाहकार और मार्गदर्शक बनाया है। ईश्वर के प्रेम का वृत्त हर समय आपके चारों ओर है, आपको अपने भीतर समाए है। आप ईश्वर की अमर बाँहों में विश्राम कर रहे हैं।

हम सभी को अपनी समस्याएँ सुलझाने के लिए अंदरूनी मार्गदर्शन लेना चाहिए। यदि आपके पास कोई आर्थिक समस्या है, तो रात को सोने से पहले यह दोहराएँ: "अब में चैन से सोऊँगा। में ने यह मामला अपने अंदर की ईश्वरीय बुद्धिमत्ता के हवाले कर दिया है। यह जवाब जानती है। जब सुबह सूरज उगेगा, तो मेरा जवाब भी सामने आ जाएगा। में जानता हूँ कि सूरज का उगना कभी नहीं रुकता है।" फिर सोने चले जाएँ।

किसी समस्या पर परेशान न हों, चिंता न करें, आवेश में न आएँ। रात की नींद से सही सलाह मिलती है। समस्या पर सो जाएँ। आपकी बुद्धि आपकी सारी समस्याएँ नहीं सुलझा सकती। उस रोशनी के लिए प्रार्थना करें, जो आने वाली है। याद रखें कि भोर हमेशा आती है; कि छायाएँ दूर चली जाती हैं। हर रात की नींद को एक संतुष्टि भरा आनंद बनने दें।

आप परिस्थितियों के शिकार नहीं हैं; आप तो सिर्फ़ खुद को ऐसा मानते हैं। आप किसी भी परिस्थिति या स्थिति के ऊपर उठ सकते हैं, उससे उबर सकते हैं। जब आप आध्यात्मिक सत्य की चट्टान पर खड़े होते हैं और अपने अधिक गहरे उद्देश्यों तथा इच्छाओं के प्रति निरंतर निष्ठावान रहते हैं, तो आपको भिन्न अनुभव मिलेंगे।

बड़े स्टोर्स में मैनेजर जासूस नियुक्त करते हैं, ताकि ग्राहकों को चोरी करने से रोका जा सके। वे हर दिन बिना कुछ दिए, कुछ लेने की कोशिश करने वाले लोगों को पकड़ते हैं। ऐसे सभी लोग अभाव और सीमा की चेतना में जी रहे हैं। दरअसल वे खुद से चुरा रहे हैं और हर तरह के नुक़सान को आकर्षित कर रहे हैं। इन लोगों की ईश्वर में आस्था नहीं है और वे यह नहीं समझते हैं कि उनका मन कैसे काम करता है। यदि वे सच्ची जगह, दैवी अभिव्यक्ति और आपूर्ति के लिए प्रार्थना करें, तो उन्हें नौकरी मिल जाएगी; फिर ईमानदारी, अखंडता और लगन के ज़रिये वे अपने और समाज के लिए गौरव बन जाएँगे।

ईसा मसीह ने कहा था, "तुम्हारे साथ ग़रीब हमेशा रहेंगे; लेकिन में हमेशा नहीं रहूँगा।" चेतना की ग़रीब अवस्थाएँ इस अर्थ में हमारे साथ हमेशा रहती हैं, कि चाहे आपके पास इस वक़्त चाहे जितनी दौलत हो, आप किसी दूसरी चीज़ को अपने पूरे दिल से चाहते हैं। हो सकता है कि यह स्वास्थ्य संबंधी समस्या हो। शायद किसी बेटे-बेटी को मार्गदर्शन की ज़रूरत हो या घर में सद्भाव की कमी हो। उस पल आप ग़रीब हैं।

जब तक हम अभाव के बारे में सोचते रहते हैं, तब तक हम कभी नहीं जान सकते कि समृद्धि क्या है। "में ने बारह को चुना है, और तुममें से एक शैतान है।"

चाहे वह इंग्लैंड का सम्राट हो या झुग्गियों का लड़का, हम सभी सीमाओं और जातिगत विश्वासों के साथ पैदा हुए थे। इन्हीं सीमाओं के माध्यम से हम विकास करते हैं। समस्याएँ और मुश्किलें न हों, तो हम कभी अपनी आंतरिक शक्ति का पता नहीं लगा पाएँगी। ग़रीबी की अवस्थाएँ ही हैं, जो हमें समाधान खोजने के लिए प्रेरित करती हैं। जब तक कि हम दुख का आँसू न टपका लें, हम कभी नहीं जान सकते कि खुशी क्या होती है। हमें ग़रीबी के बारे में जागरूक होना चाहिए, इससे मुक्ति और स्वतंत्रता की इच्छा रखनी चाहिए और दैवी संपन्नता में ऊपर उठना चाहिए।

डर, अज्ञान, चिंता, अभाव और दर्द जैसी ग़रीब अवस्थाएँ बुरी नहीं हैं, बशर्ते वे आपको इसका विपरीत चाहने के लिए प्रेरित करें। जब आप मुश्किल में फँस जाते हैं और इधर से उधर चकरघिन्नी बनते हैं; जब आप नकारात्मक, दिल चीरने वाले सवाल पूछते हैं, जैसे "ये सारी चीज़ें मेरे साथ क्यों हो रही हैं? ऐसा क्यों है कि बदक़िस्मती मेरे पीछे पड़ी नज़र आती है?" तब आपके दिमाग़ में प्रकाश होगा। अपने दुख, दर्द या कष्ट के ज़रिये आप सत्य को खोजेंगे, जो आपको मुक्त कर देता है। "विपत्ति के फल मीठे हैं, किसी बदसूरत और ज़हरीले मेंढक की तरह, जिसके सिर पर एक क़ीमती रत्न होता है।"

असंतोष के ज़रिये हमें संतोष की ओर ले जाया जाता है। जीवन के नियमों का अध्ययन करने वाले सभी लोग किसी न किसी चीज़ से असंतुष्ट रहे हैं। उनके सामने कोई समस्या या मुश्किल थी, जिसे वे नहीं सुलझा सकते थे; या वे जीवन की पहेलियों के इंसानी जवाबों से संतुष्ट नहीं थे। उन्होंने अपने भीतर ईश्वर की उपस्थिति में अपना जवाब पाया है - महान क़ीमत का मोती - क़ीमती रत्न। बाइबल कहती है, "में ने ईश्वर को खोजा था और में ने उसे पा लिया और उसने मुझे मेरे तमाम डरों से आज़ाद कर दिया।"

जब आप अपनी महत्त्वाकांक्षा या इच्छा को हासिल कर लेते हैं, तो आप सिर्फ़ कुछ समय के लिए ही संतुष्ट होंगे। इसके बाद विस्तार करने की आकांक्षा एक बार फिर मन में आ जाएगी। यह जीवन है, जो आपके ज़रिये ज़्यादा ऊँचे स्तरों पर खुद को अभिव्यक्त करना चाहता है। जब एक इच्छा संतुष्ट होती है, तो दूसरी आ जाती है, फिर तीसरी और यह सिलसिला अनंत काल तक चलता रहता है। आप यहाँ विकास करने आए हैं। जीवन स्थिर नहीं है; यह तो प्रगतिशील है। आप यहाँ एक महिमा से दूसरी महिमा तक जाने के लिए आए हैं: इसका कोई अंत नहीं है; क्योंकि ईश्वर की महिमा का कोई अंत नहीं है।

हम सभी इस अर्थ में ग़रीब हैं कि हम हमेशा जीवन में अधिक प्रकाश, ज्ञान,खुशी आरै आनदं चाहते हैं। ईश्वर अनतं है आरै अनतं काल में भी आप उस महिमा, सौंदर्य और बुद्धिमानी के ख़ज़ाने को ख़त्म नहीं कर सकते, जो आपके भीतर है। आप बहुत अद्भुत हैं।

निरपेक्ष संसार में सारी चीज़ें पूर्ण हैं, लेकिन सापेक्ष जगत में हमें उस महिमा के

प्रति जाग्रत होना चाहिए, जो हमारी थी, संसार के भी शुरू होने से पहले। चाहे आप कितने भी बुद्धिमान हों, आप और बुद्धिमानी की तलाश कर रहे हैं, इसलिए आप अब भी ग़रीब हैं। आप गणित, भौतिकी या खगोलशास्त्र के क्षेत्र में चाहे जितने ज्ञानी हों, आप केवल सतह को खरोंच रहे हैं। आप अब भी ग़रीब हैं। यात्रा हमेशा आगे की तरफ़, ऊपर की तरफ़ और ईश्वर की तरफ़ है। दरअसल यह एक जाग्रत करने वाली प्रक्रिया है, जिसके द्वारा आपको अहसास होता है कि सृजन पूर्ण है। जब आप जान जाते हैं कि ईश्वर को सीखने, विस्तार करने, विकास करने या प्रकट करने की ज़रूरत नहीं है, तो आप सीमाओं के स्वप्न से धीरे-धीरे जागना शुरू करते हैं और ईश्वर में जीवित हो जाते हैं। जब डर, अज्ञान, जातिगत विश्वास और समूह-सम्मोहन के पर्दे आपकी आँखों के सामने से गिरते हैं, तो आप उस तरह देखना शुरू करते हैं, जैसा ईश्वर देखता है। अंधे दाग़ हट जाते हैं। फिर आप संसार को उस तरह देखना शुरू करते हैं, जिस तरह ईश्वर ने इसे बनाया था; क्योंकि हम इसे ईश्वर की आँखों के ज़रिये देख रहे हैं। तब आप कहते हैं, ”देखो, स्वर्ग का साम्राज्य हमारे पास है!“

अपने भीतर के ”ग़रीब“ को खाना खिलाएँ; नग्न विचारों को वस्त्र पहनाएँ और विचार की वास्तविकता में यक़ीन करके उन्हें रूप दें। विश्वास करें कि भीतर का महान बुनकर इसे सही वस्त्र पहनाएगा। अब आपका शब्द (विचार) सजीव बन जाएगा (साकार होगा)। जब आप भूखे होते हैं (ग़रीब अवस्थाओं में), तो आप भोजन खोजते हैं। जब चिंतित होते हैं, तो आप शांति चाहते हैं। जब आप बीमार होते हैं, तो आप स्वास्थ्य चाहते हैं। जब आप कमज़ोर होते हैं, तो आप शक्ति चाहते हैं। समृद्धि की आपकी इच्छा आपके भीतर ईश्वर की आवाज़ है जो आपको बता रही है कि समृद्धि आपकी है। इसलिए अपनी ग़रीब अवस्था के ज़रिये आप विकास करने, विस्तार करने, प्रकट करने और अपनी इच्छाओं को हासिल करने की आकांक्षा पाएँगे।

आपके कंधे में होने वाला दर्द एक छिपा हुआ वरदान है। यह आपको बताता है कि आपको इस बारे में तुरंत कुछ करना चाहिए। अगर कोई दर्द और मुश्किल का संकेत न हो, तो आपकी बाँह सड़क पर अचानक टूटकर गिर सकती है। आपका दर्द ईश्वर का चेतावनी तंत्र है, जो आपको बता रहा है कि आप उसकी शांति और उसकी उपचारक शक्ति को खोजें तथा अंधकार से प्रकाश की ओर बढ़ें। जब आप ठंडे होते हैं, तो आप आग जलाते हैं। जब आप भूखे होते हैं, तो आप भोजन करते हैं। इसी तरह जब आप अभाव में हों, तो संपन्नता और समृद्धि की मनोदशा में दाख़िल हों। लक्ष्य की कल्पना करें; इसमें आनंदित हों। लक्ष्य की कल्पना करके और इसे सच महसूस करके आपने इसके साकार होने के साधनों को जाग्रत कर दिया है।

जब आप भयभीत और चिंतित हों, तो अपने मन को ईश्वर के महान सत्यों की खुराक दें, जो समय के इम्तिहान में खरे उतरे हैं और हमेशा क़ायम रहेंगे। आप महान भजनों पर मनन करके राहत पा सकते हैं। मिसाल के तौर पर: ”ईश्वर मेरा गड़रिया है; मुझे कोई कमी नहीं रहेगी।“ ”ईश्वर मेरी शरण है, मेरी मुक्ति है, मुझे किसका डर है?“ ”ईश्वर मुश्किल के समय में हमेशा मौजूद सहायता है।“ ”मेरा ईश्वर; मैं उसमें भरोसा

करूँगा।“ ”वह मुझे अपने पंखों से ढँक लेगा और में उसके डैनों तले विश्राम करूँगा।“ ”ईश्वर के साथ अकेला व्यक्ति भी बहुमत में होता है।“ ”यदि ईश्वर मेरे साथ है, तो मेरे ख़िलाफ़ कौन टिक सकता है?“ ”में ईष्वर के माध्यम से सारी चीज़ें करता हूँ, जो मुझे शक्ति देते हैं।“ इन सत्यों के उपचारक कंपन अपने मन और हृदय में भरने दें। फिर आप इस मनन प्रक्रिया का इस्तेमाल करके अपने दिमाग़ से सारे डरों, शंकाओं और चिंताओं को हटा पाएँगे।

एक और महान आध्यात्मिक सच्चाई को आत्मसात करें: ”खुश हृदय से चेहरा खुश रहता है।“ ”खुश हृदय निरंतर जश्न मनाता है।“ ”खुश हृदय दवा जैसा भला करता है; निराशा हड्डियों को सुखा देती है।“ ”इसलिए में तुम्हें याद दिलाता हूँ कि तुम अपने भीतर ईश्वर के उपहार को जाग्रत करो।“ अभी ईश्वर के उपहार को जाग्रत करना शुरू करें। इसके लिए इंद्रियों के प्रमाण को पूरी तरह अस्वीकार कर दें, अपने जातिगत मस्तिष्क की तानाशाही को नज़रअंदाज़ करें और अपने भीतर की आध्यात्मिक शक्ति को पूर्ण मान्यता दें कि यही एकमात्र कारण, एकमात्र शक्ति और एकमात्र उपस्थिति है। जान लें कि यह एक प्रतिक्रियाशील और दयालु शक्ति है। ”इसके क़रीब जाएँ और यह आपके क़रीब आएगी।“ आश्वस्ति, विश्वास और प्रेम के साथ इसके क़रीब जाएँ। यह आपको प्रेम, शांति, मार्गदर्शन और समृद्धि देकर प्रतिक्रिया करेगी।

यह आपको राहत देगी, मार्गदर्शन देगी, परामर्श देगी और परम पिता बनेगी। फिर आप कहेंगे, ”ईश्वर प्रेम है। में ने उसे पा लिया है और उसने सचमुच मुझे सारे डरों से मुक्त कर दिया है।“ यही नहीं, आप खुद को हरे चरागाहों में पाएँगे, जहाँ समृद्धि और ईश्वर की सारी दौलत आपके ज़रिये मुक्तता से प्रवाहित होती है।

दिन के दौरान खुलकर और ख़ुशी-ख़ुशी ख़ुद से कहें, ”में दिन भर ईश्वर की उपस्थिति की चेतना में चलता हूँ।“ ”उसकी पूर्णता सारे समय मेरे माध्यम से प्रवाहित होती है और मेरे जीवन के ख़ाली बर्तन भरती है।“

आप जो भी बनने की हसरत रखते हैं, जब आप उससे पूरी तरह भरे होते हैं, तो आपकी प्रार्थना का जवाब मिल जाता है यानि आपकी इच्छा पूरी हो जाती है। क्या आपके जीवन में सारे बर्तन भरे हैं? स्वास्थ्य, दौलत, प्रेम और अभिव्यक्ति के चारों स्तरों को देखें। क्या आप इन सभी स्तरों पर पूरी तरह संतुष्ट हैं? क्या इन चारों में से किसी एक में कोई कमी है? आप चाहे जो चाहते हों, वह इनमें से किसी न किसी श्रेणी में आता है।

अगर आप कहते हैं, ”में तो बस सत्य या बुद्धिमानी चाहता हूँ,“ तो आप हर जगह के सभी लोगों की इच्छा को व्यक्त कर रहे हैं। हर कोई यही चाहता है, भले ही शब्द अलग हों। सत्य या बुद्धिमानी हर व्यक्ति की सामान्य इच्छा है; यह अभिव्यक्ति की श्रेणी में आती है। आप यहाँ ईश्वर को अधिकाधिक व्यक्त करने की इच्छा करते हैं।

अपने अभाव, सीमा और समस्याओं के ज़रिये आप ईश्वर के प्रकाश में खुद को

खोजते हैं। कोई दूसरा तरीक़ा नहीं है, जिससे आप ख़ुद को खोज सकते थे।

अगर आप अपनी शक्तियों का दोनों तरफ़ इस्तेमाल नहीं कर सकते, तो आप कभी ख़ुद को नहीं खोज पाएँगे; न ही आप कभी अपने को शासित करने वाले नियम को समझ पाएँगे। अगर आपको अच्छा बनने या प्रेम करने के लिए विवश किया जाए, तो यह प्रेम नहीं होगा। तब तो आप एक कठपुतली होंगे। आपके पास प्रेम करने की स्वतंत्रता है, क्योंकि आप इसे दे सकते हैं या अपने पास रख सकते हैं। अगर किसी को प्रेम करने को मजबूर किया जाए, तो यह प्रेम नहीं होगा। जब कोई महिला आपसे कहती है कि वह आपसे प्रेम करती है और आपको चाहती है, तब क्या आपको अच्छा नहीं लगता? उसने संसार के सभी पुरुषों में से आपको चुना है। वह आपसे प्रेम करने के लिए मजबूर नहीं है। अगर वह आपसे प्रेम करने के लिए मजबूर होती, तो आपको इस बारे में अच्छा नहीं लगता और आप ख़ुश नहीं होते।

आपके पास हत्यारा या संत बनने की स्वतंत्रता है। इसी कारण हम लिंकन जैसे लोगों की प्रशंसा करते हैं। उन्होंने अच्छाई का चुनाव करने का निर्णय लिया था; हम उनके चुनाव की प्रशंसा करते हैं। यदि हम यक़ीन करते हैं कि परिस्थितियाँ, स्थितियाँ, घटनाएँ, उम्र, जाति, धार्मिक प्रशिक्षण या शुरुआती परिवेश हमारे ख़ुश, समृद्ध जीवन हासिल करने की संभावना को रोक सकते हैं, तो हम चोर और लुटेरे हैं। ख़ुशी और समृद्धि को अभिव्यक्त करने के लिए बस ख़ुश और समृद्ध महसूस करने की ज़रूरत है। दौलत की भावना से दौलत उत्पन्न होती है। चेतना की अवस्थाएँ ख़ुद को प्रकट करती हैं। इसीलिए यह कहा जाता है, ”जो भी मेरे सामने आए थे (भावना), वे चोर और डाकू हैं।“ भावना नियम है और नियम भावना है।

समृद्धि की आपकी इच्छा दरअसल ईश्वर का वादा है, जो कह रहा है कि उसकी अमीरी आपकी है। इस वादे को बग़ैर किसी मानसिक संकोच के स्वीकार करें।

क्विम्बी ने प्रार्थना की तुलना वकील के मुक़दमे की पैरवी से की थी, जो किसी न्यायाधीश के सामने जिरह करता है। मानसिक नियमों के इस शिक्षक ने कहा था कि वे यह साबित कर सकते थे कि प्रतिवादी उसका अपराधी नहीं है, जिसका आरोप उस पर लगाया गया है, लेकिन वह झूठ और झूठे विश्वासों का शिकार है। आप न्यायाधीश हैं; आप अपना ख़ुद का फ़ैसला सुनाते हैं; फिर आप स्वतंत्र हो जाते हैं। अभाव, ग़रीबी और असफलता के सभी नकारात्मक विचार झूठे हैं; वे सब झूठ हैं; उनके समर्थन में कुछ नहीं है।

आप जान जाते हैं कि केवल एक आध्यात्मिक शक्ति है, केवल एक ही प्राथमिक कारण है। इसलिए आप स्थितियों, परिस्थितियों और लोगों की राय को शक्ति देना छोड़ देते हैं। सारी शक्ति अपने भीतर की आध्यात्मिक शक्ति पर केंद्रित कर दें। जान लें कि यह समृद्धि और संपन्नता के आपके विचार पर प्रतिक्रिया करेगी। अपने अंदर विराजमान आत्मा के प्रभुत्व को पहचान लें। विचार या मानसिक चित्रण की अपनी ख़ुद

की शक्ति को पहचान लें। यही संपन्नता, स्वतंत्रता और सतत आपूर्ति पाने का तरीक़ा है। अपने मन में समृद्ध जीवन को स्वीकार करें। दौलत की आपकी मानसिक स्वीकृति और अपेक्षा का अपना खुद का गणित होता है। इसकी अभिव्यक्ति की अपनी खुद की कार्यप्रणाली होती है। जब आप समृद्धि की मनोदशा में दाख़िल होते हैं, तो समृद्ध जीवन के लिए आवश्यक सारी चीज़ें घटित हो जाएँगी। अब आप वह न्यायाधीश हैं, जो अपने मन की अदालत में किसी निर्णय पर पहुँच रहा है। क्विम्बी की तरह आपने भी निर्विवाद प्रमाण दे दिया है, जिसने दिखा दिया है कि आपके मन के नियम कैसे काम करते हैं और अब आप डर से स्वतंत्र हो गए हैं। आपने अपने मन के सारे डरों और अंधविश्वासी विचारों के सिर काट दिए हैं। डर कर्म का संकेत है। यह दरअसल बुरा नहीं है, क्योंकि यह आपको विपरीत दिशा में जाने को कहता है, यानि ईश्वर तथा सभी सकारात्मक मूल्यों में आस्था की तरफ़।

इसे अपनी दैनिक प्रार्थना बना लें; इसे अपने दिल में लिख लें: "ईश्वर मेरी आपूर्ति का स्त्रोत है। उसकी दौलत अब मेरी दौलत है। उसकी अमीरी मेरे पास खुलकर, बहुतायत में और प्रचुरता में प्रवाहित होती है। में हमेशा अपने सच्चे मूल्य के बारे में चेतन हूँ। में अपने गुणों का उपयोग मुक्तता से करता हूँ और मुझे अद्भुत रूप से दैवी मुआवज़ा मिलता है। परम पिता, आपको धन्यवाद!"

अमीरी की राह

अमीरी दिमाग़ से जुड़ी होती है। आइए एक पल के लिए मान लेते हैं कि किसी डॉक्टर का डिप्लोमा चोरी हो जाता है। उसके ऑफिस की सारी मशीनें भी चोरी हो जाती हैं। मुझे यक़ीन है, आप इस बात से सहमत होंगे कि उसकी दौलत उसके दिमाग़ में है। वह अब भी अपना काम कर सकता है, रोगों का निदान कर सकता हैं दवाएँ लिख सकता है, ऑपरेशन कर सकता हैं और चिकित्सा संबंधी व्याख्यान दे सकता है। सिर्फ़ उसके प्रतीक चोरी हुए थे; मशीनें तो वह हमेशा ले सकता है। उसकी अमीरी उसकी मानसिक क्षमता, दूसरों की मदद करने वाले उसके ज्ञान और मानवता को योगदान देने की उसकी क़ाबिलियत में थी।

जब आपके मन में मानवता के हित में योगदान देने की प्रबल इच्छा होती है, तो आप हमेशा दौलतमंद होंगे। सेवा - यानि संसार को अपने गुणों से लाभ पहुँचाना - की आपकी आकांक्षा पर सृष्टि हमेशा प्रतिक्रिया करेगी।

मैं 1929 के आर्थिक संकट के दौरान न्यू यॉर्क के एक व्यक्ति को जानता था, जिसने अपने पास की हर चीज़ गँवा दी, जिसमें उसका मकान और जीवन भर की बचत शामिल थी। मैं उससे एक व्याख्यान के बाद मिला, जो मैंने उस शहर के एक होटल में दिया था। उसने कहा: "मैंने हर चीज़ गँवा दी है। मैंने चार साल में एक मिलियन डॉलर कमाए थे। मैं इतनी राशि दोबारा कमा लूँगा। मैंने जो गँवाया है, वह एक प्रतीक है। मैं दौलत के प्रतीक को उसी तरह दोबारा आकर्षित कर सकता हूँ, जिस तरह शहद मक्खियों को आकर्षित करती है।"

मैंने कई साल तक इस आदमी के करियर पर नज़र रखी, ताकि उसकी सफलता की कुंजी का पता लगा सकूँ। यह कुंजी आपको अजीब लग सकती है, लेकिन यह बहुत पुरानी है। उसने इस कुंजी को जो नाम दिया, वह यह था, "पानी को सुरा में बदलो!" उसने बाइबल का यह हिस्सा पढ़ा और वह जान गया कि यह आदर्श स्वास्थ्य, ख़ुशी, मानसिक शांति और दौलत का जवाब था।

बाइबल में सुरा का हमेशा मतलब हैं आपकी इच्छाओं, आकांक्षाओं, योजनाओं, सपनों, आग्रहों आदि का साकार होना। दूसरे शब्दों में, ये वे चीज़ें हैं, जिन्हें आप हासिल करना और साकार करना चाहते हैं।

बाइबल में पानी का ज़िक्र आम तौर पर आपके मन या चेतना के संदर्भ में किया

गया है। पानी को जिस भी पात्र में डाला जाता है, यह उसी का आकार ले लेता है। इसी तरह, आप जिसे भी सच महसूस करते और मानते हैं, वह आपके संसार में प्रकट हो जाएगा। इस तरह आप हमेशा पानी को सुरा में बदल रहे हैं।

बाइबल प्रबुद्ध लोगों ने लिखी थी। यह रोज़मर्रा का व्यावहारिक मनोविज्ञान और जीवनशैली सिखाती है। बाइबल का एक मुख्य नियम यह हैं कि सही विचार, भावना और विश्वासों के ज़रिये आप अपनी खुद की तक़दीर को तय करते हैं, ढालते हैं, बनाते हैं और आकार देते हैं। यह आपको सिखाती हैं कि आप किसी भी समस्या को सुलझा सकते हैं, किसी भी स्थिति से उबर सकते हैं और आप सफल होने, जीतने तथा विजय पाने के लिए पैदा हुए हैं। यदि आप अमीरी का राजमार्ग खोजना चाहते हैं, जीवन में तरक्की करना चाहते हैं, तो इस हेतु आवश्यक शक्ति और सुरक्षा पाने के लिए आपको बाइबल को पारंपरिक दृष्टिकोण से देखना छोड़ देना चाहिए।

ऊपर दिया आदमी, जो वित्तीय सकंट मैं था, कंगाली मैं भी खुद से कई बार कहा करता था, ”मैं पानी को सुरा में बदल सकता हूँ!“ इन शब्दों का उसके लिए यह मतलब था, ”मैं अपने मन में ग़रीबी के विचारों की जगह पर अपनी वर्तमान इच्छाओं या आवश्यकताओं के साकार स्वरूप को रख सकता हूँ, जो दौलत और आर्थिक संपन्नता है।“

उसका मानसिक नज़रिया (पानी) था, ”एक बार मैंने ईमानदारी से दौलत बनाई थी। मैं इसे (सुरा) दोबारा बना लूँगा।“ वह नियमित रूप से कहता था, ”मैंने एक बार प्रतीक (धन) को आकर्षित किया था, मैं इसे दोबारा आकर्षित कर रहा हूँ। मैं यह बात जानता हूँ और महसूस करता हूँ कि यह सच हैं (सुरा)।“

यह आदमी एक रासायनिक कंपनी का सेल्समैन बन गया। उनके उत्पादों के बेहतर प्रचार के विचार उसके मन मैं आए और उसने उन्हें कंपनी को बता दिया। कुछ ही समय में उसे वाइस-प्रेसिडेंट बना दिया गया। चार साल के भीतर कंपनी ने उसे प्रेसिडेंट बना दिया। उसका सतत मानसिक नज़रिया था, ”मैं पानी को सुरा में बदल सकता हूँ!“

जॉन में पानी को सुरा में बदलने की कहानी को अलंकारिक दृष्टि से देखें और खुद से कहें, जिस तरह ऊपर बताए रासायनिक सेल्समैन ने किया था: ”मैं अपने अदृश्य विचारों, आकांक्षाओं, सपनों और इच्छाओं को साकार कर सकता हूँ, क्योंकि मैंने मन का एक सरल, शाश्वत नियम खोज लिया है।“

जिस नियम का उसने प्रदर्शन किया, वह क्रिया और प्रतिक्रिया का नियम है। इसका मतलब हैं कि आपका बाहरी जगत, शरीर, परिस्थितियाँ, परिवेश और आर्थिक प्रतिष्ठा हमेशा आपकी आंतरिक सोच, विश्वासों, भावनाओं और मान्यताओं का पूर्ण प्रतिबिंब हैं। यह सच है, इसलिए अब आप सफलता, दौलत और मानसिक शांति के विचारों पर मनन करके अपने आंतरिक वैचारिक नक़्शे को बदल सकते हैं जब आप अपने

मस्तिष्क को इन बाद वाली अब्धरणाओं से भरा रखते हैं, तो ये विचार आपकी मानसिकता में धीरे-धीरे उसी तरह रिस जाएँगे, जिस तरह ज़मीन में बोए गए बीज। चूँकि सारे बीज (विचार) अपनी तरह की फ़सल देते हैं, इसलिए आपकी आदतन सोच और भावना भी समृद्धि, सफलता तथा मानसिक शांति में प्रकट होगी। समझदार विचार (क्रिया) के बाद सही कार्य (प्रतिक्रिया) होता है।

आप अमीरी हासिल कर सकते हैं, जब आप इस तथ्य को जान लेते हैं कि प्रार्थना विवाह का उत्सव है। यह उत्सव मनोवैज्ञानिक है; आप अपनी अच्छाई या अपनी इच्छा पर मानसिक रूप से मनन करते हैं (मानसिक रूप से खाते हैं), जब तक कि आप इसके साथ एक नहीं हो जाते।

मैं अब एक केस हिस्ट्री बताऊँगा कि कैसे एक युवती ने ”पानी को सुरा में“ बदलकर अपना पहला चमत्कार किया था। उसकी माँ बीमार हो गई थीं। इस वजह से उसे काफ़ी समय तक घर पर रहना पड़ा और कारोबार को नज़रअंदाज़ करना पड़ा। उसकी अनुपस्थिति में उसकी दो सहयोगियों ने पैसों का गबन कर लिया। वह दिवालिया हो गई, उसका घर चला गया और वह गहरे कर्ज़ में डूब गई। वह अपनी माँ के अस्पताल के बिल नहीं चुका सकती थी और अब वह बेरोज़गार थी।

मैंने इस महिला को पानी को सुरा में बदलने का जादुई फार्मूला समझाया। एक बार फिर, हमने उसके सामने स्पष्ट कर दिया कि सुरा का मतलब प्रार्थना की सफलता या उसके लक्षय का साकार होना है।

वह बाहरी जगत से जूझ रही थी। उसने कहा, ”तथ्यों की ओर देखें: मैंने हर चीज़ गँवा दी है; संसार बहुत बेरहम है। मैं अपने बिलों का भुगतान नहीं कर सकती। मैं प्रार्थना इसलिए नहीं करती हूँ, क्योंकि मैंने आशा गँवा दी है।“ वह भौतिक जगत में इतनी खोई और डूबी हुई थी कि अपनी स्थिति के आंतरिक कारण से पूरी तरह अनजान थी। हमारी बातचीत के बाद वह समझने लगी कि उसे पहले अपने मन में झगड़े को सुलझाना था।

चाहे आपकी इच्छा या लक्षय जो भी हो, जब आप यह पुस्तक पढ़ते हैं, तो आपको अपने मन में इसका कोई न कोई विरोधी विचार भी मिलेगा। मिसाल के तौर पर, हो सकता हैं कि आप स्वास्थ्य चाहते हों; लेकिन इसके साथ ही आपके दिमाग़ में ऐसे कई विचार भी घुमड़ रहे होंगे: ”मेरा इलाज नहीं हो सकता। मैंने कोशिश की है, लेकिन कोई फ़ायदा नहीं हुआ; यह ज़्यादा बुरा होता जा रहा है।“ ”मैं आध्यात्मिक मानसिक उपचार के बारे में पर्याप्त नहीं जानता हूँ।“

जब आप अपना अध्ययन करते हैं, तो क्या आपके मन में रस्साकशी नहीं होती है? इस लड़की की तरह ही आप भी पाते हैं कि परिवेश और बाहरी चीज़ें आपकी अभिव्यक्ति, दौलत तथा मानसिक शांति की इच्छा को चुनौती दे रही हैं।

सच्ची प्रार्थना मानसिक विवाह उत्सव हैं और यह हमें सिखाता हैं कि मानसिक संघर्ष को कैसे सुलझाना है। प्रार्थना में आप वह ”लिखते हैं“ जिस पर भी आप अपने मन मैं विश्वास करते हैं इमसर्न ने कहा था, ”मनुष्य वह है, जो वह दिन भर सोचता है।“ अपनी आदतन सोच के ज़रिये आप विश्वास के अपने मानसिक नियम बनाते हैं। किसी निश्चित विचार को दोहराकर आप निश्चित राय और विश्वास ज़्यादा गहरे मन में स्थापित कर लेते हैं, जिसे अवचेतन कहा जाता है। इसके बाद ये मानसिक स्वीकृतियाँ, विश्वास और राय सारे बाहरी कार्यों को निर्देशित व नियंत्रित करती हैं। इसे समझना और इस पर अमल शुरू करना ”पानी को सुरा“ में बदलने की दिशा में पहला क़दम है। यानि, यह अभाव और सीमा को प्रचुरता व समृद्धि में बदलने की दिशा में पहला क़दम है। जो व्यक्ति अपनी आंतरिक आध्यात्मिक शक्तियों से अनजान है, वह इसी वजह से जातिगत विश्वासों, अभाव और सीमाओं वाले जीवन में रह रहा है।

अभी अपनी बाइबल खोलें और अपना पहला चमत्कार करें, जैसा इस ब्यूटी पार्लर वाली ने किया था। आप यह कर सकते हैं। यदि आप बाइबल को सिर्फ़ एक ऐतिहासिक घटना के रूप में पढ़ते हैं, तो आप मन के आध्यात्मिक, मानसिक और वैज्ञानिक दृष्टिकोणों को नहीं समझ पाएँगे, जिनका वर्णन इस पुस्तक में किया जा रहा है।

आइए इस अंश को लेते हैं: ”और तीसरे दिन काना ऑफ़ गैलिली में एक विवाह था और ईसा मसीह की माँ वहाँ थीं।“ गैलिली का मतलब हैं आपका मन या चेतना। काना का मतलब हैं आपकी इच्छा। विवाह आपकी इच्छा का विशुद्ध मानसिक या व्यक्तिपरक मूर्त रूप है। प्रार्थना का यह पूरा सुंदर नाटक मनोवैज्ञानिक है, जिसमें सभी पात्र आपके भीतर की मानसिक अवस्थाएँ, भावनाएँ और विचार हैं।

ईसा मसीह का एक अर्थ प्रबुद्ध तर्क भी है। ईसा मसीह की माँ का मतलब हैं वे भावनाएँ, मनोदशाएँ या भाव, जो हमारे स्वामी होते हैं।

”और ईसा मसीह तथा उनके शिष्यों को विवाह में बुलाया गया।“ आपके शिष्य आपकी आंतरिक शक्तियाँ हैं, जो आपको अपनी इच्छाएँ साकार करने में समर्थ बनाती हैं।

”और जब वे सुरा चाहते थे, तो ईसा मसीह की माँ ने ईसा मसीह से कहा, उनके पास कोई सुरा नहीं है।“ जैसा हमने बताया है, सुरा प्रार्थना की सफलता या आपकी इच्छा व लक्षयों का आपके जीवन में प्रकटीकरण है। अब आप देख सकते हैं कि यह एक रोज़मर्रा का नाटक है, जो आपके जीवन में भी घटित होता है।

जब आप किसी चीज़ को हासिल करना चाहते हैं, जैसा कि यह लड़की चाहती थी - जैसे नौकरी खोजना, पैसे पाना और अपनी समस्या से बाहर निकलने का तरीक़ा खोजना - तो अभाव के सुझाव आपके पास आते हैं, जैसे, ”कोई उम्मीद नहीं है। सब कुछ चला गया है। मैं इसे हासिल नहीं कर सकता; स्थिति निराशाजनक है।“ यह बाहरी जगत

की आवाज़ आपसे कह रही है, ”उनके पास कोई सुरा नहीं है,“ या ”तथ्यों को देखो।“ यह अभाव, सीमा या बंधन की भावनाओं की आवाज़ है।“

आप परिस्थितियों और स्थितियों की चुनौती का सामना कैसे करते हैं? अब तक आप मन के नियमों से परिचित हो चुके हैं, जो इस तरह हैं: ”जैसा मैं अंदर से सोचता और महसूस करता हूँ, वैसा ही मेरा बाहरी जगत है; यानि, मेरा शरीर, आर्थिक स्थिति, परिवेश, सामाजिक स्थिति और संसार तथा मनुष्यों के साथ मेरे बाहरी संबंध के सारे रूप।“ आपकी आंतरिक, मानसिक गतिविधियाँ और चित्र आपके जीवन के बाहरी धरातल को शासित करती हैं, नियंत्रित करती हैं और दिशा देती हैं।

बाइबल कहती है, ”जैसा वह अपने दिल में सोचता है, वैसा ही वह है।“ ”हार्ट“ (दिल) कैल्डियन भाषा का शब्द है, जिसका मतलब अवचेतन मन है। दूसरे शब्दों में, आपके विचार को आपके अचेतन स्वरूप की शक्ति द्वारा व्यक्तिपरक स्तरों तक पहुँचना होगा।

विचार और भावना आपकी तक़दीर हैं। भावना और रुचि से सराबोर विचार हमेशा साकार होता हैं और आपके संसार में प्रकट हो जाता है। प्रार्थना आपके विचार और भावना का विवाह है; विवाह उत्सव का यही मतलब है।

मन का कोई भी विचार या इच्छा, जिसे सच महसूस किया जाए, घटित हो जाती है, चाहे यह अच्छी हो, बुरी हो या तटस्थ हो। अब आप इस नियम को जान चुके हैं कि आप अपने मन में जिसकी भी कल्पना करते हैं और महसूस करते हैं, उसे आप बाहर व्यक्त करेंगे, प्रकट करेंगे या अनुभव करेंगे। इस ज्ञान की बदौलत अब आप अपने मन को अनुशासित कर सकते हैं।

जब अभाव, डर, शंका या निराशा के सुझाव (उनके पास कोई सुरा नहीं है) आपके मन में आएँ, तो उन्हें तुरंत मानसिक रूप से अस्वीकार कर दें और प्रार्थना के फल या अपनी इच्छा के साकार होने पर ध्यान केंद्रित करें।

बाइबल में दिए कथन जॉन 2 के हैं और ये अलंकारिक अभिव्यक्तियाँ हैं। ”मेरा समय अभी नहीं आया है।“ और ”महिला, मेरा तुम्हारे साथ क्या संबंध है।“

जब हम इन कथनों की व्याख्या करत ेहैं तो महिला का मतलब वह नकारात्मक भावना है, जिसमें आप डूबते हैं। इन नकारात्मक सुझावों में कोई शक्ति या वास्तविकता नहीं है, क्योंकि उनका समर्थन करने के लिए कुछ नहीं है।

अभाव के सुझाव में कोई शक्ति नहीं है; शक्ति तो आपके ख़ुद के विचार और भावना में निहित है।

ईश्वर का आपके लिए क्या मतलब है? ईश्वर सर्वशक्तिमान आध्यात्मिक शक्ति

को दिया गया एक नाम है। ईश्वर एक अदृश्य स्त्रोत है, जिससे सारी चीज़ें प्रवाहित होती हैं।

जब आपके विचार सृजनात्मक और मैत्रीपूर्ण होते हैं, तो आपके विचार पर प्रतिक्रिया करने वाली आध्यात्मिक शक्ति मधुर संबंधों, स्वास्थ्य और समृद्धि के रूप में प्रवाहित होती है। अभाव के हर विचार को पूरी तरह अस्वीकार करने के अद्भुत अनुशासन का अभ्यास करें। आध्यात्मिक शक्ति की त्वरित उपलब्धता को पहचानें; अपने सृजनात्मक विचारों और चित्रों पर इसकी प्रतिक्रिया को पहचानें। तब आप इन शब्दों में पाए जाने वाले सत्य का अभ्यास कर रहे होंगे, ”महिला, मेरा तुम्हारे साथ क्या संबंध है?“

हम पढ़ते है, ”मेरा समय अभी नहीं आया हैं “ इसका मतलब है कि हालाँकि आप अभी तक किसी विश्वास या सकारात्मक मानसिक अवस्था तक नहीं पहुँच पाए हैं, लेकिन आप जानते हैं कि आप सही राह पर हैं, क्योंकि आप अपने मन को सकारात्मक आदर्शों, लक्षयों और उद्देश्यों पर केंद्रित कर रहे हैं। मन जिस पर भी केंद्रित होता है, यह कई गुना होता है, बढ़ता हैं और तरक्की करता है, जब तक कि आख़िरकार मन चेतना की नई अवस्था के अनुरूप नहीं हो जाता। फिर आपका अनुकूलन सकारात्मक हो जाता है, जबकि पहले आपका अनुकूलन नकारात्मक था।

प्रार्थना में आध्यात्मिक व्यक्ति अभाव की मनोदशा से आत्मविश्वास, शांति और अपने भीतर की आध्यात्मिक शक्ति में विश्वास की मनोदशा तक पहुँचता है। चूँकि उसका विश्वास और आस्था आध्यात्मिक शक्ति में है, इसलिए उसकी माँ (मनोदशा और भावना) विजय या जीत की भावना दर्ज करती है; यह आपकी प्रार्थना का फल या समाधान ले आएगा।

बाइबल की कहानी में घड़े मानसिक चक्रों का प्रतिनिधित्व करते हैं, जिनसे मनुष्य अपनी इच्छा की व्यक्तिपरक प्राप्ति के लिए गुज़रता है। समय एक पल, घंटा, सप्ताह या महीना कुछ भी हो सकता है, जो विद्यार्थी की चेतना की अवस्था और आस्था पर निर्भर करता है।

प्रार्थना में हमें इंद्रियों के प्रमाणों और बाहरी जगत से पूरी तरह विरक्त हो जाना चाहिए। हमें अपने मन को झूठे विश्वासों, डर, शंका और चिंता से साफ़ कर लेना चाहिए। अपने मन के पहियों को रोक दें। फिर शांत मन से सफल प्रार्थना की ख़ुशी पर तब तक मनन करें, जब तक कि आंतरिक निश्चितता न आ जाए, यानि जब तक आप यह न जान जाएँ कि आप जान गए हैं। जब आप अपनी इच्छा के साथ एक होने में सफल हो जाते हैं, तो आप मानसिक विवाह में सफल हो जाते हैं - यानि आपकी भावना का आपके विचार के साथ संयोग।

मुझे विश्वास हैं कि आप इस पल अपने मन में स्वास्थ्य, मधुर संबंध, सफलता

और उपलब्धि के साथ विवाह (एक होना) चाहते हैं। हर बार जब आप प्रार्थना करते हैं, तो आप काना के विवाह उत्सव (अपनी इच्छा या आदर्शों को साकार करने) की कोशिश कर रहे हैं। आप शांति, सफलता, कल्याण और आदर्श स्वास्थ्य की अब्धरणाओं के साथ मानसिक रूप से एक होना चाहते हैं।

"उन्होंने उन्हें लबालब भर दिया।" छह घड़े आध्यात्मिक और मानसिक सृजनात्मक कार्य में आपके मन का प्रतिनिधित्व करते हैं। आपको अपने मन को लबालब भरना होगा, यानि आपको अपने मन को उस भावना से पूरी तरह भरना होगा, जो आप बनने की हसरत रखते हैं। जब आप अपने लक्षय से अपने मन को भरने में सफल हो जाते हैं और इसे लबालब भर लेते हैं, तो फिर आप इसके बारे में प्रार्थना करना छोड़ देते हैं, क्योंकि आप अपने मन में इसकी सच्चाई को महसूस कर लेते हैं। आप जान जाते हैं! यह चेतना की पूर्ण हो चुकी अवस्था है। आप इसके बारे में शांति में हैं।

"और उन्होंने उनसे कहा, अब निकलो और उत्सव के संचालक के पास उठाकर ले जाओ।" हमारे अवचेतन मन में जो भी बोया जाता है, वह हमेशा संसार के पर्दे पर वस्तु के रूप में उभरता है। फलस्वरूप जब हम विश्वास की अवस्था में दाख़िल होते हैं कि हमारी प्रार्थना सफल हो गई है, तो हम एक तरह से आदेश देते हैं, "उत्सव के संचालक के पास उठाकर ले जाओ।"

आप हमेशा अपने मानसिक उत्सव के संचालक हैं। दिन के दौरान हज़ारों विचार, सुझाव , राय, दृश्य और ध्वनियाँ आपके आँख-कान तक पहुँचती हैं। आप उन्हें मानसिक उपयोग के लिए अनुचित मानकर अस्वीकार कर सकते हैं या फिर उन्हें स्वीकार कर सकते हैं, जैसा आप चुनाव करें। आपका चेतन, तार्किक, बौद्धिक मन उत्सव का संचालक है। जब आप चेतन रूप से मनोरंजन, मनन, उत्सव करने का चुनाव करते हैं और अपने दिल की इच्छा को सच मानने की कल्पना करते हैं, तो यह एक सजीव अभिव्यक्ति बन जाती है। यह आपकी मानसिकता का हिस्सा बन जाती है, ताकि आपका अधिक गहरा स्वरूप इसे जन्म या अभिव्यक्ति दे। दूसरे शब्दों में, व्यक्तिपरक रूप से जिसकी भी छाप छोड़ी जाती है, वह वस्तुपरक रूप में व्यक्त होता है। आपकी इंद्रियाँ या चेतन मन आपकी भलाई का वस्तु के रूप में परिवर्तन देखता है। जब चेतन मन "पानी को सुरा बनाने" के बारे में जागरूक बनता है, तो यह सफल प्रार्थना के बारे में जागरूक बनता है। पानी को अदृश्य, निराकार, आध्यात्मिक शक्ति, अनुकूलन-रहित चेतना भी कहा जा सकता है। सुरा अनुकूलित चेतना या मस्तिष्क द्वारा इसके विश्वासों को जन्म देना है।

जो सेवक आपके लिए पानी निकालते हैं, वे शांति, आत्मविश्वास और आस्था की मनोदशा का प्रतिनिधित्व करते हैं। आपकी आस्था या भावना के अनुरुप ही आपका हित आपके प्रति आकर्षित होता है।

इस पुस्तक में बताए गए आध्यात्मिक सिद्धांतों को आत्मसात करें, इनकी सराहना करें, इनसे प्रेम करें। ईसा मसीह के पहले दर्ज चमत्कार में आपको बताया गया

हैं कि प्रार्थना एक विवाह उत्सव है, जहाँ मन इसकी इच्छा के साथ एक होता है।

प्रेम नियम की पूर्णता है। प्रेम दरअसल एक भावनात्मक जुड़ाव है, आपकी भलाई के साथ एकाकार होने का अहसास है। आप जिससे प्रेम करते हैं, आपको उसके प्रति सच्चा रहना होगा। आपको अपने उद्देश्य या लक्षय के प्रति वफ़ादार रहना होगा। जब हम डर, शंका, चिंता, तनाव या झूठी मान्यताओं के साथ मानसिक रूप से इश्क लड़ाते हैं या विवाह करते हैं, तो हम उसके प्रति सच्चे नहीं हो रहे हैं, जिससे हम प्रेम करते हैं। प्रेम एकत्व की अवस्था है, पूर्णता की अवस्था है। (लेखक की पुस्तक लव इज़ फ्रीडम देखें।)

जब ऊपर बताई गई ब्यूटी पार्लर वाली युवती को यह सरल नाटक समझाया गया, तो वह मानसिक रूप से अमीर बन गई। उसने इस नाटक को समझ लिया और अपने जीवन में इस पर अमल करने लगी। उसने इस तरह प्रार्थना की: वह जानती थी कि पानी (उसका खुद का मन) बहेगा और उसकी नई सोच तथा भावना पर प्रतिक्रिया करते हुए सारे ख़ाली पात्र भर देगा।

रात को यह महिला बहुत शांत व स्थिर हो जाती थी, अपने शरीर को शिथिल कर लेती थी और सृजनात्मक चित्रों का इस्तेमाल करने लगती थी। उसने जिन तरीक़ों का इस्तेमाल किया, वे यूँ थे:

पहला क़दम: वह कल्पना करने लगी कि स्थानीय बैंक मैनेजर बैंक में भारी जमाराशि करने पर उसे बधाई दे रहा था। वह इसकी कल्पना लगभग पाँच मिनट तक करती रही।

दूसरा क़दम: कल्पना में उसने सुना कि उसकी माँ कह रही थीं, "मैं तुम्हारे अद्भुत, नए पद के बारे में बहुत खुश हूँ।" वह यह बात सुखद, खुश अंदाज़ में तीन से पाँच मिनट तक सुनती रही।

तीसरा क़दम: उसने स्पष्टता से कल्पना की कि पादरी उसके विवाह की रस्म करा रहे हैं। इस महिला ने मुझे पादरी के रूप में कहते सुना, "अब मैं तुम्हें पति-पत्नी घोषित करता हूँ।" यह अभ्यास पूरा करने के बाद वह पूर्ण महसूस करते हुए सो गई, यानि उसने अपने भीतर प्रार्थना पूरी होने की ख़ुशी महसूस की।

तीन सप्ताह तक कुछ भी नहीं हुआ; दरअसल स्थितियाँ ज़्यादा बिगड़ गईं, लेकिन वह जुटी रही और उसने "नही" का जवाब स्वीकार करने से इंकार किया। वह जानती थी कि आध्यात्मिक रूप से विकास करने के लिए उसे अपने डर को आस्था में बदलकर अपना पहला चमत्कार करना था। उसे अभाव की मनोदशा को समृद्धि और संपन्नता की मनोदशा में बदलना था। उसे पानी (चेतना) को उन स्थितियों, परिस्थितियों और अनुभवों में बदलना था, जिन्हें वह अभिव्यक्त करना चाहती थी।

चेतना, जागरूकता, अस्तित्वाभास, सिद्धांत, आत्मा या चाहे आप इसे जो भी नाम दे दें, यही सबका कारण है। यह एकमात्र उपस्थिति और शक्ति है। हमारे भीतर की आध्यात्मिक शक्ति या आत्मा ही सभी चीज़ों का कारण और सार है। सारी चीज़ें - पक्षी पेड़, तारे, सूर्य, चंद्रमा, पृथ्वी, सोना, चाँदी और प्लैटिनम - इसी के प्रकट रूप हैं। यह सारी चीज़ों का कारण और सार है। ”कोई दूसरी चीज़ नहीं है।“

यह समझने पर वह जान गई कि पानी (चेतना) आपूर्ति बन सकता था, उसके लिए पैसे, सच्चे पद या सच्ची अभिव्यक्ति के रूप में, उसकी माँ के लिए स्वास्थ्य के रूप में, साथ ही जीवन की पूर्णता और साहचर्य के रूप में। उसने पलक झपकते ही इस सरल - लेकिन गहरे - सत्य को देख लिया और उसने मुझसे कहा, ”मैं अपनी भलाई को स्वीकार करती हूँ।“

वह जानती थी कि हमसे कुछ नहीं छिपा है; ईश्वर हमारे भीतर हैं और हमारी खोज व अनुसंधान का इंतज़ार कर रहा है।

एक महीने से भी कम समय में इस युवती का विवाह हो गया। मैंने ही उस विवाह की रस्म कराई। मैंने वे शब्द कहे, जो उसने मनन की शिथिल अवस्था में बार-बार सुने थे, ”अब मैं तुम्हें पति-पत्नी घोषित करता हूँ!“

उसके पति ने विवाह के तोहफ़े में उसे 24,000 डॉलर का चेक दिया और संसार की सैर पर ले गया। ब्यूटी पार्लर की मालकिन के रूप में उसकी नई अभिव्यक्ति उसके घर और बाग का सौंदर्यीकरण थी, जिससे उसके मन का रेगिस्तान गुलाब की तरह लहलहाने लगा।

उसने ”पानी को सुरा“ में बदल दिया। पानी या उसकी चेतना उसकी सतत, सच्ची, खुश तस्वीरों से आवेशित या अनुकूलित हो गई। ये तस्वीरें जब ज़्यादा गहरे मन की विकासशील शक्तियों में नियमित व सुनियोजित रूप से, आस्था के साथ बोई जाती हैं, तो वे अंधकार (अवचेतन मन) से प्रकाश (संसार के पर्दे पर वस्तु के रूप में) में बाहर आ जाएँगी।

एक महत्त्वपूर्ण नियम है: इस नई विकसित फ़िल्म (परत) पर डर, शंका, निराशा और चिंता का विनाशकारी प्रकाश न पड़ने दें। जब भी चिंता या डर आपका दरवाज़ा खटखटाए, तो तुरंत अपने मन में देखी गई तस्वीर की ओर मुड़ें और खुद से कहें, ”एक सुंदर तस्वीर मेरे मन के अंधेरे कमरे में विकसित हो रही है।“ उस तस्वीर पर मानसिक रूप से खुशी, आस्था और समझ की भावना उड़ेलें। आप जानते हैं कि आपने एक मनोवैज्ञानिक, आध्यात्मिक नियम पर कार्य किया है; क्योंकि जिसकी भी छाप छूटती है, वही व्यक्त होगा। यह अद्भुत है!

नीचे एक निश्चित तरीक़ा है, जिससे आप अपने जीवन में आवश्यक सारी भौतिक दौलत और आपूर्ति को प्रकट व विकसित कर सकते हैं। अगर आप इस फॉर्मूले

पर सच्चाई और ईमानदारी से अमल करते हैं, तो आपको बाहरी स्तर पर प्रचुर पुरस्कार मिलेगा। मैं एक आदमी का प्रसंग बताकर इसे रेखांकित करूँगा, जो निराशाजनक आर्थिक स्थिति में लंदन में मुझसे मिलने आया। वह चर्च ऑफ़ इंग्लैंड का सदस्य था और उसने कुछ हद तक अवचेतन मन की कार्य-प्रक्रिया का अध्ययन किया था।

मैंने उससे दिन में बार-बार यह कहने की सलाह दी, ”ईश्वर मेरी आपूर्ति का स्त्रोत हैं और मेरी सारी आवश्यकताएँ हर पल, हर जगह पूरी हो रही हैं।“ इस संसार में पशुओं के जीवन के बारे में सोचें और अंतरिक्ष की सारी आकाशगंगाओं के बारे में सोचें, जिनकी परवाह एक असीम प्रज्ञा कर रही है। ग़ौर करें कि प्रकृति कितनी उदार, प्रचुर और अतिशय है। समुद्र की मछलियों के बारे में सोचें, जिन्हें खाना मिल रहा है, साथ ही ”आसमान के पक्षियों“ के बारे में भी सोचें।

उसे यह अहसास होने लगा कि जब से वह पैदा हुआ था, उसकी परवाह की गई थी। माँ ने उसे भोजन दिया था, पिता ने कपड़े दिए थे और प्रेमपूर्ण अभिभावकों ने उसका ध्यान रखा था। इस आदमी को एक नौकरी मिली थी, जिसमें उसे अच्छी तनख़्वाह मिलती थी। उसे यह मानना अतार्किक लगा कि जीवन के जिस सिद्धांत ने उसे जीवन दिया था और उसकी हमेशा परवाह की थी, वह अचानक उस पर प्रतिक्रिया करना क्यों छोड़ देगा।

उसे अहसास हुआ कि यह प्रतिक्रिया उसी की क्रिया की वजह से हुई थी। उसने अपने नियोक्ता से द्वेष करके, ख़ुद की आलोचना व निंदा करके और अक्षमता के अहसास द्वारा अपनी ख़ुद की आपूर्ति को काट लिया था। उसने मनोवैज्ञानिक रूप से उस धागे को काट लिया था, जो उसे सारी चीज़ों के अनतं स्त्रातेसे जाडे त ा था - अंदर निवास करने वाली आत्मा या जीवन सिद्धांत, जिसे कुछ लोग ”चेतना या जागरूकता“ कहते थे।

मनुष्य को पक्षियों की तरह भोजन नहीं दिया जाता है। उसे अंदर वास करने वाली शक्ति और उपस्थिति से चेतन रूप से संपर्क करना होगा तथा अपनी ज़रूरतों की संतुष्टि के लिए आवश्यक सारी चीज़ें, मार्गदर्शन, शक्ति व प्राणशक्ति हासिल करनी होंगी।

यही वह फार्मूला है, जिसका इस्तेमाल उसने पानी को समृद्धि व आर्थिक सफलता की सुरा में बदलने के लिए किया। उसे अहसास हो गया कि ईश्वर या उसके भीतर की आध्यात्मिक शक्ति सभी चीज़ों का कारण थी। इससे बढ़कर उसे अहसास हुआ कि अगर वह इस विचार पर विश्वास कर ले कि उसके पास दौलत का दैवी अधिकार है, तो वह दौलत उत्पन्न कर लेगा।

उसने जिस कथन का इस्तेमाल किया, वह थी, ”ईश्वर मेरी आपूर्ति का स्त्रोत है। मेरी सारी आर्थिक और अन्य ज़रूरतें समय के हर पल और हर जगह पूरी हो रही हैं;

हमेशा दैवी समृद्धि है।" इस सरल कथन को बार-बार, अक्सर, जानते-बूझते हुए और समझदारी से दोहराए जाने पर उसके मन में समृद्धि की चेतना भर गई।

उसे तो बस खुद को यह सकारात्मक विचार बेचना भर था, जिस तरह किसी अच्छे सेल्समैन को अपने उत्पाद के गुण खुद को बेचने होते हैं। ऐसा व्यक्ति अपनी कंपनी की ईमानदारी, प्रोडक्ट की उच्च गुणवत्ता, ग्राहक को दी जाने वाली अच्छी सेवा और सही भाव पर विश्वास करता है।

मैंने उससे कहा कि जब भी उसके मन में नकारात्मक विचार आएँ, जो कि आएँगे, तो वह उनसे कभी न लड़े, बल्कि सीधे आध्यात्मिक, मानसिक फॉर्मूले पर जाए और शांति व प्रेम से इसे दोहराए। कई मौक़ों पर नकारात्मक विचार सैलाब की तरह उसके दिमाग़ में आए, नकारात्मकता की बाढ़ के रूप में आए। हर बार उसने उनका सामना इस सकारात्मक, दृढ़, निष्ठापूर्ण विश्वास के साथ किया: "ईश्वर मेरी सारी ज़रूरतों की आपूर्ति करता है; मेरे जीवन में दैवी समृद्धि है।"

उसने कहा कि जब वह अपनी कार चलाता था और दिनचर्या से गुज़रता था, तो बहुत सारी नकारात्मक अवधारणाएँ उसके दिमाग़ में समय-समय पर भीड़ लगा देती थीं, जैसे, "कोई उम्मीद नहीं है।" "तुम कड़के हो।" हर बार जब ऐसे नकारात्मक विचार आते थे, तो वह उन्हें अपने दिमाग़ के भीतर प्रवेश करने की इजाज़त नहीं देता था और दौलत, स्वास्थ्य तथा सारी चीज़ों के शाश्वत स्त्रोत की ओर मुड़ जाता था, जिन्हें वह आध्यात्मिक जागरूकता की वजह से अपनी मानता था। निश्चित और सकारात्मक रूप से वह दावा करता था, "ईश्वर मेरी आपूर्ति का सतत स्त्रोत हैं और वह आपूर्ति अब मेरी है!" या, "एक दैवी समाधान है। ईश्वर की दौलत मेरी दौलत है," और ऐसे ही अन्य सकारात्मक कथन, जो उसके मन को आशा, आस्था, अपेक्षा और अंततः इस विश्वास से आवेशित कर देते थे कि एक अनंत प्रवाहित होने वाला अमीरी का झरना है, जो उसकी सारी ज़रूरतों की पूर्ति प्रचुरता से, खुशी-खुशी और अंतहीन रूप से कर रहा था।

विचारों की नकारात्मक बाढ़ एक घंटे में पचास बार तक उसके मन की ओर आती थी। इन घुसपैठियों, हत्यारों और चोरों को अपने मन में घुसने के लिए हर बार वह दरवाज़ा खोलने से इंकार कर देता था। वह जानता था कि ये उसकी शांति, दौलत, सफलता और सारी अच्छी चीज़ों को छीन लेंगे। इसके बजाय वह अपने मन का द्वार सिर्फ़ ईश्वर के शाश्वत जीवन सिद्धांत के विचार की ओर खोलता था, जो दौलत, स्वास्थ्य, ऊर्जा, शक्ति और पूर्ण तथा सुखद जीवन जीने के लिए आवश्यक सारी चीज़ों के रूप में उसके जीवन में प्रवाहित हो रहा था।

जब उसने ऐसा किया, तो दूसरे दिन कम चारों ने उसके द्वार पर दस्तक दी। तीसरे दिन नकारात्मक आगंतुकों का प्रवाह और कम हो गया। चैथे दिन वे प्रवेश की आशा में काफ़ी अंतर से आए, लेकिन उन्हें वही मानसिक प्रतिक्रिया मिली: "कोई प्रवेश नहीं! मैं सिर्फ़ उन्हीं विचारों और अवधारणाओं को स्वीकार करता हूँ, जो मेरे मन को सक्रिय करें,

उपचार दें, आशीष दें और प्रेरित करें!"

उसने अपनी चेतना या मन को दोबारा अनुकूलित करके दौलत की चेतना स्थापित कर ली। "इस संसार का राजकुमार आता है और मुझमें कुछ नहीं पाता।" इससे आपके मन में यह पहुँचता है: डर, अभाव, चिंता, तनाव जैसे नकारात्मक विचार आए तो सही, लेकिन उसके मन से उन्हें कोई प्रतिक्रिया नहीं मिली। अब वह प्रतिरक्षित था, ईश्वर में मस्त था और दैवी आस्था से ओत-प्रोत था, समृद्धि और आर्थिक आपूर्ति की हमेशा व्यापक होती चेतना में था। इस आदमी ने हर चीज़ नहीं खोई; न ही वह दिवालिया हुआ। उसे कर्ज़ की मोहलत मिली; उसका कारोबार बेहतर हो गया; उसके लिए नए द्वार खुल गए और वह समृद्ध हो गया।

याद रखें, प्रार्थना की प्रक्रिया में आपको हमेशा अपने लक्षय, उद्देश्य और ध्येय के प्रति निष्ठावान रहना चाहिए। कई लोग दौलत और आर्थिक सफलता हासिल करने में इसलिए असफल रहते हैं, क्योंकि वे दोतरफ़ा प्रार्थना करते हैं। वे कहते हैं कि ईश्वर उनकी आपूर्ति का स्त्रोत हैं और वे दैवी रूप से समृद्ध हैं, लेकिन कुछ मिनट बाद ही वे यह कहकर अपनी भलाई से इंकार करते हैं, "मैं इस बिल का भुगतान नहीं कर सकता।" "मैं इस, उस, या अमुक चीज़ का ख़र्च नहीं उठा सकता।" या वे खुद से कहते हैं, "कोई शाप मेरा पीछा कर रहा है।" "मैं महीने का ख़र्च नहीं चला सकता।" "मेरे पास गुज़ारा करने के लिए कभी पर्याप्त नहीं रहता।" ऐसे सारे कथन बेहद विनाशकारी हैं और आपकी सकारात्मक प्रार्थनाओं को विफल कर देते हैं। इसे ही "दोतरफ़ा प्रार्थना करना" कहा जाता है।

आपको अपनी योजना या अपने लक्षय के प्रति निष्ठावान रहना होगा। आपको आध्यात्मिक शक्ति के अपने ज्ञान के प्रति सच्चा रहना होगा। नकारात्मक विवाह करना छोड़ें, यानि नकारात्मक विचारों, डरों और चिंताओं के साथ संयुक्त होना बंद करें।

प्रार्थना उस कप्तान की तरह है, जो अपने जहाज़ को दिशा का निर्देश दे रहा है। आपके पास एक मंज़िल होनी चाहिए। आपको पता होना चाहिए कि आप कहाँ जा रहे हैं। जहाज़ का कप्तान नौपरिवहन के नियमों को जानते हुए अपनी दिशा को नियंत्रित करता है। अगर तूफ़ानों या बड़ी लहरों के कारण जहाज़ दिशा से भटकता है, तो वह शांति से इसे दोबारा इसकी सच्ची दिशा की ओर मोड़ लेता है।

आप जहाज़ के कप्तान हैं और आप अपने विचारों, भावनाओं, रायों, विश्वासों, मनोदशाओं और मानसिक दशा के ज़रिये आदेश दे रहे हैं। प्रकाश-रेखा पर अपनी निगाह रखें। आप वहीं जाते हैं, जहाँ आपकी दृष्टि होती है! इसलिए उन सारी बाधाओं, विलंबों और अवरोधों को देखना छोड़ें, जिनकी वजह से आप अपनी दिशा से भटक सकते हैं। निश्चित और सकारात्मक रहें। तय करें कि आप कहाँ जा रहे हैं। जान लें कि आपका मानसिक नज़रिया ही वह जहाज़ है, जो आपको अभाव तथा सीमा की मनोदशा से समृद्धि की मनोदशा और भावना तथा इस विश्वास तक ले जाएगा कि ईश्वर का

अपरिहार्य नियम आपके लिए काम कर रहा है।

क्विम्बी एक डॉक्टर, एक अदभुत विद्यार्थी और मन के मानसिक व आध्यात्मिक नियमों के शिक्षक थे। उन्होंने कहा था, ”मनुष्य उसी तरह काम करता है, जिस तरह उस पर काम किया जाता है।“ इस समय आपको कौन चलाता है? वह कौन-सी चीज़ हैं जो जीवन पर आपकी प्रतिक्रिया को तय करती हैं? जवाब हैं : आपके विचार, विश्वास और राय आपके मन को सक्रिय करती हैं और इस बिंदु तक अनुकूलित करती हैं कि आप क्विम्बी के अनुसार, ”अपने विश्वासों की अभिव्यक्ति“ बन जाते हैं। यह क्विम्बी के कथन के सत्य को रेखांकित करता है: ”मनुष्य अभिव्यक्त विश्वास है।“

क्विम्बी का एक और लोकप्रिय कथन था, ”हमारे मन परिवेशों की तरह घुलते-मिलते हैं और हर व्यक्ति की उस परिवेश में अपनी पहचान होती है।“ जब आप बच्चे थे, तो आप घर की मनोदशाओं, भावनाओं, विश्वासों और आम मानसिक परिवेश के नियंत्रण में थे। माता-पिता के डर, चिंताएँ, अंधविश्वास, धार्मिक आस्था और विश्वास की छाप आपके दिमाग़ पर छूटी थी।

आइए मान लेते हैं कि कोई बच्चा एक ग़रीब घर में बड़ा हुआ था, जहाँ कभी पर्याप्त पैसे नहीं थे। उसने लगातार अभाव और सीमा की शिकायतें सुनीं।

आप सॉल्टर की तरह अपनी अनुकूलित अचेतन मनोचिकित्सा में कह सकते हैं कि बच्चा ग़रीबी के प्रति अनुकूलित था। इस किशोर को अपने शुरुआती अनुभवों, प्रशिक्षण और विश्वासों पर आधारित ग़रीबी की ग्रंथि हो सकती है, लेकिन स्थिति चाहे जो हो, वह उससे उबर सकता हैं और स्वतंत्र हो सकता है। यह प्रार्थना की शक्ति के ज़रिये किया जाता है।

मैं 17 साल के एक किशोर को जानता था, जो न्यू यॉर्क के ”बदनाम इलाक़े“ में पैदा हुआ था। मैं उस वक़्त स्टाइन-वे हॉल, न्यू यॉर्क में व्याख्यान दे रहा था, जो उसने सुने। इस लड़के को अहसास हुआ कि वह नकारात्मक, विनाशकारी सोच का शिकार था और अगर उसने अपने मन को सृजनात्मक मार्ग पर दिशा नहीं दी, तो वैश्विक मन इसके डरों, असफलताओं, नफ़रतों और ईर्ष्याओं के साथ उसे अपने शिकंजे में कस लेगा। ”मनुष्य उसी तरह काम करता है, जिस तरह उस पर काम किया जाता है।“

जैसा क्विम्बी जानते थे, यह तर्कपूर्ण लगता हैं कि अगर मनुष्य अपने ख़ुद के मकान (मन) को नहीं सँभालता है, तो इस संसार का प्रचार, झूठी मान्यताएँ, डर और चिंताएँ उस पर सम्मोहक मंत्र की तरह काम करेंगी।

हम जातिगत मस्तिष्क में डूबे हुए हैं, जो बीमारी, मौत, दुर्भाग्य, दुर्घटना, असफलताओं, रोग और विभिन्न विनाशों में विश्वास करता है। बाइबल के आदेश का अनुसरण करें: ”उनके बीच से बाहर आ जाओ और अलग रहो।“ ख़ुद को मानसिक और भावनात्मक रूप से उन शाश्वत सत्यों के साथ एकाकार करें, जो समय के इम्तिहान में खरे

उतरे हैं।

इस युवक ने सोचने और खुद के लिए योजना बनाने का निर्णय लिया। उसने उसी समय ईश्वर की समृद्धि को स्वीकार करके और मन में आध्यात्मिक अवधारणाओं तथा अनुभूतियों को भरकर अमीरी के राजमार्ग को पकड़ने का निर्णय लिया। वह जानता था कि यह करने पर सारे नकारात्मक विचार अपने आप उसके मन से बाहर निकल जाएँगे।

उसने ”वैज्ञानिक कल्पना“ नामक एक सरल प्रक्रिया अपनाई। उसकी आवाज़ बहुत शानदार थी, लेकिन उसने कहीं कोई प्रशिक्षण नहीं लिया था। मैंने उसे बताया कि वह अपने मन में जिस तस्वीर पर ध्यान देगा, वह उसके अवचेतन मन में विकसित हो जाएगी और साकार हो जाएगी। वह समझ गया कि यह मन का नियम हैं - क्रिया और प्रतिक्रिया का नियम हैं - यानि, चेतन मन में रखी गई मानसिक तस्वीर पर अवचेतन मन की प्रतिक्रिया।

यह युवक घर पर अपने कमरे में शांति से बैठता था, अपने पूरे शरीर को तनावरहित करता था और स्पष्टता से कल्पना करता था कि वह एक माइक्रोफ़ोन के सामने गा रहा था। वह दरअसल मशीन के ”अहसास“ की पूर्ण कल्पना करता था। वह सुनता था कि मैं उसके अद्भुत अनुबंध पर उसे बधाई दे रहा हूँ और उसे बता रहा हूँ कि उसकी आवाज़ कितनी कमाल की है। इस मानसिक तस्वीर पर नियमित और सुनियोजित तरीक़े से ध्यान और निष्ठा देने का नतीजा यह हुआ कि उसके अवचेतन मन पर एक गहरी छाप छूट गई।

कुछ समय बाद न्यू यार्क के एक इतालवी स्वर प्रशिक्षक ने एक सप्ताह मैं कइ बार उसे मुफ़्त प्रशिक्षण दिया, क्योंकि उसने उसकी सम्भबनाओं को देख लिया था। उसे एक अनुबंध मिल गया, जिसने उसे यूरोप, एशिया, दक्षिण अफ्रीका और दूसरी जगहों की प्रदर्शनिओं मैं गाने के लिए भेजा गया। उसकी आथिर्क चिंताएं अब ख़त्म हो गई थी, क्योंकि उसे बहतु अच्छी तनख्वाह भी मिली। उसके छिपे हुए गुण और उन्हें मुक्त करने की योग्यता उसकी असली दौलत थी। हम सभी के भीतर के ये गुण और शक्तियाँ ईश्वर की दी ईहु हैं; आइए हम उन्हें मुक्त करें।

क्या आपने कभी खुद से पूछा है, ”मैं अपने साथी इंसानों के लिए ज्यादा उपयोगी कैसे बन सकता हूँ?“ ”मैं मानवता के प्रति अधिक योगदान कैसे दे सकता हूँ?“

मेरे एक पादरी मित्र ने मुझे बताया कि शुरुआती दिनों में वे और उनका चर्च आर्थिक दृष्टि से बुरे हाल में थे। उनकी तकनीक या प्रक्रिया यह सरल प्रार्थना थी, जिसने उनके लिए चमत्कार कर दिए, ”ईश्वर लोगों को दैवी सत्य बताने के बेहतर तरीक़े मेरे सामने उजागर करता है।“ पैसा आने लगा। कर्ज़ कुछ सालों में पट गया और उसके बाद उन्हें कभी पैसे की चिंता नहीं करनी पड़ी।

यह अध्याय पढ़ने पर अब आप सीख चुके हैं कि मनुष्य की आंतरिक भावनाएँ,

मनोदशाएँ और विश्वास हमेशा उसके बाहरी संसार को नियंत्रित और शासित करते हैं। मन की आंतरिक गतिविधियाँ बाहरी गतिविधियों को नियंत्रित करती हैं। बाहर बदलने के लिए आपको भीतर बदलना होगा। ”जैसा स्वर्ग में, वैसा धरती पर;“ या जैसा मेरे मन या चेतना में है, वैसा ही मेरे शरीर, परिस्थितियों और परिवेश में होता है।

बाइबल कहती है, ”कोई चीज़ छिपी नहीं है, जो उजागर नहीं की जाएगी।“ मिसाल के तौर पर, अगर आप बीमार हैं, तो आप एक मानसिक और भावनात्मक नक़्शा प्रकट कर रहे हैं, जो उस बीमारी का असल कारण है। अगर आप विचलित हैं या आपको कोई बुरी ख़बर मिलती है, तो ग़ौर करें कि आप इसे कैसे अपने चेहरे, आँखों, मुद्राओं, लहज़े के अलावा अपनी चाल-ढाल और हाव-भाव में उजागर करते हैं। वास्तव में, आपका पूरा शरीर आपके अंदरूनी दुख को उजागर करता है। ज़ाहिर है, मानसिक अनुशासन और प्रार्थना की बदौलत आप पूरी तरह संतुलित, शांत और अविचलित रह सकते हैं; आप अपनी अंदरूनी भावनाओं या मानसिक अवस्थाओं को दिखाने से इंकार कर सकते हैं। आप अपने शरीर की मांसपेशियों को शिथिल होने, शांत रहने और स्थिर रहने का आदेश दे सकते हैं; उन्हें आपका आदेश मानना ही होगा। आपकी आँखें, चेहरा और होंठ दुख, क्रोध या निराशा का कोई भी चिन्ह उजागर नहीं करेंगे। दूसरी तरफ़, थोड़े अनुशासन के साथ प्रार्थना और ध्यान के ज़रिये आप पूरी तस्वीर को बदल सकते हैं। हालाँकि आपको विचलित करने वाली ख़बर मिली थी, लेकिन इसकी गंभीर प्रकृति से परे आप ख़ुशी, शांति, सुकून और एक जोशपूर्ण, प्रफुल्ल प्रकृति दिखा सकते हैं। किसी को कभी पता भी नहीं चल पाएगा कि आपको तथाकथित बुरी ख़बर मिली थी।

आपको आज चाहे जैसी भी ख़बर मिली हो, आप आईने के सामने जाकर अपने चेहरे, होंठों, आँखों और मुद्राओं को देख सकते हैं, जब आप ख़ुद को बताते हैं और कल्पना करते हैं कि आपने भारी दौलत पाने की ख़बर सुनी है। इसका नाटकीयकरण करें, इसे महसूस करें, इसके बारे में रोमांचित हों और ग़ौर करें कि आपका पूरा शरीर आंतरिक रोमांच पर कैसे प्रतिक्रिया करता है।

आप प्रार्थना के ज़रिये किसी भी स्थिति को उलट सकते हैं। अपने मन को शांति, सफलता, दौलत और ख़ुशी की अवधारणाओं से व्यस्त रखें। मानसिक, भावनात्मक और चित्रात्मक रूप से इन विचारों के साथ जुड़ाव बनाएँ।

अपनी वैसी तस्वीर बनाएँ, जैसे कि आप बनना चाहते हैं, उस तस्वीर को क़ायम रखें, ख़ुशी, आस्था और अपेक्षा से उसे पोषण दें। आख़िरकार आप इसका अनुभव करने में सफल होंगे।

जो लोग आर्थिक अभाव के बारे में मुझसे परामर्श लेने आते हैं, उनसे मैं ”दौलत से विवाह करने“ को कहता हूँ। कुछ समझते हैं, बाक़ी नहीं समझते। जैसा बाइबल के सभी विद्यार्थी जानते हैं, आपकी पत्नी वह है, जिससे आप मानसिक रूप से संयुक्त हैं, जिसके साथ आप एक हैं।

दूसरे शब्दों में, आप जिसकी कल्पना करते हैं और जिसमें यक़ीन करते हैं, उसे आप जन्म देते हैं। अगर आपको यक़ीन है कि संसार भावहीन, बेरहम और कठोर है, कि यह ”कुत्ता कुत्ते को खाता है“ वाली जीवनशैली है, तो यह आपकी अवधारणा है। आपका इससे विवाह हुआ है और इस विवाह से आपके बच्चे होंगे। ऐसे मानसिक विवाह या विश्वास से होने वाली संतानें आपके अनुभव, स्थितियाँ और परिस्थितियाँ होंगी, साथ ही आपके जीवन की बाक़ी सभी घटनाएँ। आपके सारे अनुभव और जीवन पर प्रतिक्रियाएँ उन विचारों की तस्वीर और चित्र होंगे, जिन्होंने उन्हें जन्म दिया है।

उन पत्नियों को देखें, जिनके साथ आम आदमी रह रहा है, जैसे डर, शंका, चिंता, आलोचना, ईर्ष्या और क्रोध। ये उसके मन में तबाही मचा देते हैं। यह दावा करके, महसूस करके और विश्वास करके दौलत से विवाह करें: ”ईश्वर वैभव में अपनी दौलत के अनुसार मेरी सभी ज़रूरतें पूरी करता है।“ या नीचे दिया कथन लें और इसे जानते-बूझते हुए तब तक बार-बार दोहराएँ, जब तक कि आपकी चेतना इससे ओत-प्रोत नहीं हो जाती या यह आपके मनन का हिस्सा नहीं बन जाता: ”मैं दैवी रूप से अभिव्यक्त हूँ और मेरी आमदनी अद्भुत है।“ इसे तोते की तरह न रटें, बल्कि जान लें कि आपके विचारों की छाप आपके अवचेतन मन पर अंकित हो रही हैं और यह चेतना की अनुकूलित अवस्था बन जाती है। इस वाक्य को अपने लिए अर्थपूर्ण बनने दें। इस पर जीवन, प्रेम और भावना उड़ेलें। इसे सजीव बनाएँ।

मेरी कक्षाओं के एक विद्यार्थी ने हाल ही में एक रेस्तराँ खोला। उसने मुझे फ़ोन करके बताया कि उसकी शादी एक रेस्तराँ से हो गई है। उसका मतलब था कि उसने बहुत सफल, मेहनती और लगनशील बनने का मन बना लिया हैं और यह देखने का कि उसका कारोबार समृद्ध हो। इस मनुष्य की पत्नी (मानसिक) उसकी इच्छा की कामयाबी में उसका विश्वास था।

जीवन में अपने लक्षय के साथ जुड़ाव बनाएँ और आलोचना, आत्म-निंदा, क्रोध, डर और चिंता के साथ मानसिक विवाह बंद करें। अपने चुने हुए लक्षय पर ध्यान दें। समृद्धि और सफलता के अवश्यंभावी नियम में विश्वास और आस्था से सराबोर रहें। एक मिनट तक अपने लक्षय से प्रेम करके और अगले ही मिनट उससे इंकार करके आपको कुछ हासिल नहीं होगा। यह तो अम्ल और क्षार को मिलाने जैसा है, जिससे आपको एक उदासीन तत्व ही मिलेगा। अमीरी के राजमार्ग पर चलने के लिए आपको अपने चुने हुए लक्षय (आपकी पत्नी) के प्रति निष्ठावान रहना होगा।

इन्हीं सत्यों से संबंधित प्रसंग हमें बाइबल में मिलते हैं। मिसाल के तौर पर, ”हव्वा को आदम की पसली से बनाया गया।“ आपकी पसली आपकी अवधारणा, इच्छा, विचार, याजे ना, लक्षय या जीवन में उद्देश्य है।

हव्वा का मतलब हैं भावना, अहसास की प्रकृति या अंदरूनी स्वर। दूसरे शब्दों में, आपको विचार को जन्म देना होगा। विचार को जन्म देना होगा, प्रेम करना होगा

और इसे सच महसूस करना होगा, ताकि यह जीवन में आपके लक्षय को प्रकट करे, साकार करे।

विचार पिता है; भावना माँ है; विवाह का उत्सव आपके जीवन में हमेशा घटित हो रहा है।

उस्पेंस्की ने तीसरे तत्व के बारे में बोला था, जो आपकी इच्छा और भावना के संयोग के बाद बना या दाख़िल हुआ। उन्होंने इसे तटस्थ तत्व कहा। हम इसे ”शांति“ कह सकते हैं; क्योंकि ईश्वर शांति है।

बाइबल कहती है, ”और शासन उसके कंधों पर होगा।“ दूसरे शब्दों में, दैवी बुद्धिमत्ता को अपना मार्गदर्शक बनने दें। अपने भीतर की व्यक्तिपरक बुद्धिमत्ता को सभी तरीक़ों से अपना नेतृत्व करने दें, मार्गदर्शन करने दें और शासित करने दें। अपना आग्रह इस अंदर वास करने वाली उपस्थिति के हवाले कर दें और अपने दिल तथा आत्मा में जान लें कि यह चिंता को दूर कर देगी, घाव को भर देगी और आपकी आत्मा को दोबारा समभाव व शांति तक पहुँचा देगी। अपने दिल और दिमाग़ को खोलें और कहें, ”ईश्वर मेरा पायलट है। वह मेरा नेतृत्व करता है। वह मुझे समृद्ध बनाता है। वह मेरा परामर्शदाता है।“ अपनी प्रार्थना को सुबह और रात होने दें, ”मैं एक मार्ग हूँ, जिसके ज़रिये ईश्वर की दौलत अनंत रूप से, प्रचुरता में और मुक्तता से प्रवाहित होती है।“ इस प्रार्थना को अपने दिल पर लिख लें, इसे अपने दिमाग़ पर अंकित कर लें। ईश्वर की महिमा की प्रकाश-रेखा पर केंद्रित रहें।

जो मनुष्य अपने मन की आंतरिक कार्यप्रणाली नहीं जानता है, वह बोझ, चिंताओं और तनावों से भरा रहता है। वह यह नहीं सीख पाया हैं कि कैसे अपना बोझ अंदर वास करने वाली उपस्थिति पर डालकर मुक्त हुआ जाता है।

ज़ेन संन्यासी से उनके एक शिष्य ने पूछा, ”सत्य क्या है?“ उन्होंने बोरे को अपनी पीठ से उतारकर ज़मीन पर रख दिया और प्रतीकात्मक तरीक़े से जवाब दे दिया।

शिष्य ने फिर उनसे पूछा, ”गुरुजी, यह कैसे काम करता है?“

जऩे सन्यासी अब भी खामोश रहे, उन्होंने बोरा अपनी पीठ पर दोबारा लादा और गुनगुनाते हुए सड़क पर चलने लगे। बोरा आपका बोझ है, आपकी समस्या है। आप इसे व्यक्तिपरक बुद्धिमत्ता पर डाल देते हैं, जो सब कुछ जानती हैं और उपलब्धि का ”व्यावहारिक ज्ञान“ रखती है। यह केवल जवाब जानती है।

बोरे को दोबारा अपनी पीठ पर लादने का मतलब हैं कि हालाँकि मेरे पास अब भी समस्या है, लेकिन अब मैं मानसिक चैन से हूँ और बोझ से राहत मिल चुकी है, क्योंकि मैंने दैवी बुद्धिमत्ता का आह्वान कर लिया है, इसलिए मैं विजय का गीत गाता हूँ और जानता हूँ कि मेरी प्रार्थना का जवाब आ रहा हैं और मैं आने वाली ख़ुशी को देखकर गा

रहा हूँ। यह अद्‌भुत है।

"हर व्यक्ति शुरुआत में अच्छी सुरा लाता हैं और जब लोग अच्छी तरह पी लेते हैं, तो फिर बदतर सुरा लाता है; लेकिन तुमने अच्छी सुरा अब तक रखी है।" यह हर उस व्यक्ति के बारे में सच है, जब वह पहली बार मन के नियमों के ज्ञान में दाख़िल होता है। वह ऊँचे उत्साह और महत्त्वाकांक्षाओं के साथ शुरू करता है। वह नई झाड़ू है, जो साफ़ करती है। उसके इरादे अच्छे होते हैं, लेकिन प्रायः वह शक्ति के स्त्रोत को भुला देता है। वह अपने भीतर के सिद्धांत के प्रति निष्ठावान नहीं रहता है, जो वैज्ञानिक हैं और जो उसे मनचाहा फल देगा, जो उसे उसके नकारात्मक अनुभवों से उबारकर स्वतंत्रता तथा मानसिक शांति के उच्च मार्ग पर पहुँचा देगा। वह मानसिक और भावनात्मक रूप से ऐसे विचारों तथा भावनाओं में भटक जाता है, जो उसके तय लक्षय और उद्देश्य के लिहाज़ से असंबद्ध होते हैं। दूसरे शब्दों में, वह अपने लक्षय या पत्नी के प्रति वफ़ादार नहीं होता।

यह जान लें कि आपके भीतर का व्यक्तिपरक या ज़्यादा गहरा स्वरूप आपके आग्रह को स्वीकार करेगा और महान रचयिता होने के नाते यह इसे अपने तरीक़े से घटित कराएगा। आपको तो बस यह करना हैं कि अपने आग्रह को आस्था और विश्वास के साथ मुक्त करें, ठीक उसी तरह जिस तरह आप ज़मीन में कोई बीज बोते हैं या किसी मित्र को चिट्ठी डालते हैं, यह जानते हुए कि जवाब मिलेगा।

क्या आप कभी दो बड़ी चट्टानों के बीच गए हैं और अपनी आवाज़ की गूँज सुनी है? आपके भीतर का जीवन सिद्धांत भी इसी तरह जवाब देता है। आप अपनी ही आवाज़ की गूँज सुनेंगे। आपकी आवाज़ मन की आंतरिक, मानसिक गतिविधि हैं - आपकी आंतरिक, मनोवैज्ञानिक यात्रा है, जहाँ आपने मानसिक रूप से एक विचार पर तब तक उत्सव मनाया, जब तक कि आपने खुद को लबालब नहीं भर लिया; फिर आपने आराम किया।

इस नियम और इसके इस्तेमाल के तरीक़े को जानते हुए यह यक़ीन रखें कि आप कभी शक्ति, दंभ, घमंड या मिथ्या अहं से नहीं भरते हैं। इस नियम का उपयोग अपने साथ-साथ दूसरों को आशीष देने, उपचार करने, प्रेरित करने और ऊपर उठाने के लिए करें।

मनुष्य अपने साथी इंसानों से स्वार्थवश लाभ लेकर इस नियम का दुरुपयोग करता है। अगर आप ऐसा करते हैं, तो आप खुद को चोट पहुँचाते हैं और नुक़सान को अपने प्रति आकर्षित करते हैं। शक्ति, सुरक्षा और दौलत बाहर से हासिल नहीं की जाती हैं। वे तो शाश्वत अंदरूनी ख़ज़ाने से आती हैं। हमें यह अहसास करना चाहिए कि अच्छी सुरा हमेशा मौजूद है, क्योंकि ईश्वर अमर वर्तमान है। वर्तमान परिस्थितियों से परे, आप साबित कर सकते हैं कि आपकी भलाई हमेशा मौजूद है, अगर आप खुद को मानसिक रूप से समस्या से विरक्त कर दें, और चैकस रहकर अपने परम पिता के कार्य में जुटें रहें।

चैकस रहने का मतलब अपनी भलाई का चित्र देखना है, अपनी नई अवधारणा पर केंद्रित होना है, इससे विवाह करना हैं और निष्ठावान रहकर खुश मनोदशा को क़ायम रखना हैं - रास्ते के हर क़दम पर आस्था से लबालब भरे - यह जानते हुए कि खुशी की सुरा, प्रार्थना का फल, राह में है। ”आज मुक्ति का दिवस है।“ ”स्वर्ग का साम्राज्य निकट है।“ ”तुमने अच्छी सुरा अब तक रखी है।“

आप इसी पल अपने मन की मनोवैज्ञानिक यात्रा कर सकते हैं और दैवी कल्पना के ज़रिये मानसिक रूप से मनचाही अवस्था में दाख़िल हो सकते हैं। दौलत, सेहत या जो भी आविष्कार आप करना चाहते हैं, वे सभी पहलेपहल अदृश्य होते हैं। हर चीज़ अदृश्य से उत्पन्न होती है। आप पहले व्यक्तिपरक रूप से दौलत के मालिक बनते हैं, इसके बाद ही आप दौलत के वस्तुपरक मालिक बनते हैं। दौलत की भावना से दौलत उत्पन्न होती है, क्योंकि दौलत चेतना की अवस्था है। चेतना की अवस्था वह हैं जो आप सोचते हैं, महसूस करते हैं, यक़ीन करते हैं और जिसके प्रति मानसिक सहमति देते हैं।

कैलिफ़ोर्निया में एक टीचर को हर साल पाँच-छह हज़ार डॉलर का वेतन मिलता था। उसने एक दुकान में एक सुंदर सफ़ेद अर्मीन कोट देखा, जिसका भाव 8,000 डॉलर था। उसने कहा, ”इतना पैसा बचाने में तो मुझे कई साल लग जाएँगे। मैं इसका ख़र्च कभी नहीं उठा सकती। ओह, मैं इसे कितना चाहती हूँ!“ उसने रविवार की सुबह हमारे प्रवचन सुने। इन नकारात्मक अवधारणाओं से विवाह करना छोड़कर उसने सीखा कि वह अपना मनचाहा कोट, कार या कोई भी दूसरी चीज़ हासिल कर सकती हैं और इसके लिए उसे संसार में किसी को चोट पहुँचाने की ज़रूरत नहीं है।

मैंने उससे यह कल्पना करने को कहा कि उसने कोट पहन रखा है। कि कल्पना में वह इसका सुंदर फ़र छुए, महसूस करे और इसे सचमुच पहनने की भावना जगाए। वह रात को सोने से पहले अपनी कल्पना की शक्ति का इस्तेमाल करने लगी। उसने अपनी कल्पना में वह कोट पहना, उसे सहलाया, उस पर हाथ फेरा, जिस तरह कि कोई बच्ची अपनी गुड़िया के साथ करती है। वह ऐसा करती रही और आख़िरकार उसे इस सबका रोमांच महसूस हो गया।

वह हर रात यह काल्पनिक कोट पहनकर सोने गई और इसे हासिल करने पर वह बहुत खुश थी। तीन महीने गुज़र गए, लेकिन कुछ नहीं हुआ। वह डगमगाने वाली थी, लेकिन उसने खुद को याद दिलाया कि सतत मनोदशा से ही परिणाम मिलते हैं। ”जो अंत तक लगनशील रहता है, उसे ही बचाया जाएगा।“ समाधान उसी व्यक्ति के पास आएगा, जो डगमगाता नहीं है, बल्कि हमेशा अपने साथ ईश्वर की उपस्थिति का इत्र लेकर चलता है। जवाब उस व्यक्ति के पास आता है, जो इस रोशनी में चलता हैं कि ”यह हो चुका है!“ आप हमेशा ईश्वर की उपस्थिति के इत्र का इस्तेमाल कर रहे हैं, जब आप अपेक्षा की सुखद, खुशनुमा मनोदशा को क़ायम रखते हैं और यह जानते हैं कि आपकी भलाई राह पर है। आपने इसे अदृश्य में देखा था और आप जानते हैं कि आप इसे दृश्य में भी देखेंगे।

इस शिक्षिका के मन के नाटक का अंत रोचक है। हमारे प्रवचन के बाद एक रविवार की सुबह एक आदमी ने संयोग से उसके पैर पर पैर रख दिया। उसने उससे काफ़ी माफ़ी माँगी और पूछा कि वह कहाँ रहती है। फिर उसने युवती को उसके घर ले जाने का प्रस्ताव रखा। युवती ने ख़ुशी-ख़ुशी प्रस्ताव स्वीकार कर लिया। कुछ समय बाद ही उस आदमी ने विवाह का प्रस्ताव रखा, उसे हीरे की एक सुंदर अँगूठी दी और उससे कहा, ”मैंने बहुत कमाल का कोट देखा; उसे पहनकर तुम ग़ज़ब की लगोगी!“ यह वही कोट था, जिसे तीन महीने पहले उसने दिल से चाहा था। (सेल्समैन ने कहा कि सौ से भी ज़्यादा दौलतमंद महिलाओं ने वह कोट देखा था, उसे बहुत पसंद भी किया था, लेकिन किसी कारण से हमेशा किसी दूसरे कोट को चुना था।)

चुनाव करने की अपनी क्षमता के ज़रिये उसकी हक़ीक़त की कल्पना करें, जिसे आपने चुना है। आस्था व लगन के ज़रिये आप जीवन में अपने लक्ष्य को हासिल कर सकते हैं। स्वर्ग की सारी दौलत यहीं आपके भीतर हैं और मुक्त होने का इंतज़ार कर रही है। शांति, ख़ुशी, प्रेम, मार्गदर्शन, प्रेरणा, सद्भाव और समृद्धि सभी इसी समय मौजूद हैं। ईश्वर की दौलत को अभिव्यक्त करने के लिए आपको बस इतना करना हैं कि आप अभी के वर्तमान (अपनी सीमा) को छोड़ दें, मानसिक तस्वीर में दाख़िल हों और एक सुखद, ख़ुशनुमा मनोदशा में अपने लक्षय के साथ एक हो जाएँ। उच्च उल्लास के पलों में अपनी अच्छाई को देखने और महसूस करने के बाद आप जान जाते हैं कि कुछ ही समय में आप अपने लक्षय को वस्तुपरक तरीक़े से भी साकार होते देखेंगे। जैसा भीतर, वैसा बाहर। जैसा ऊपर, वैसा नीचे। जैसा स्वर्ग में, वैसा धरती पर। दूसरे शब्दों में, आप अपने विश्वासों को अभिव्यक्त होते देखेंगे। मनुष्य एक अभिव्यक्त विश्वास है!

लेखक के बारे में

जोसेफ़ मर्फ़ी का जन्म 20 मई 1898 को काउंटी ऑफ़ कॉर्फ, आयरलैंड के एक छोटे कस्बे में हुआ था। उनके पिता डेनिस मर्फ़ी एक जेज़ुइट संस्था नैशनल स्कूल ऑफ़ आयरलैंड में कनिष्ठ पादरी और प्रोफ़ेसर थे। उनकी माँ एलन कानेली गृहिणी थीं, जिन्होंने बाद में एक और बेटे जॉन तथा बेटी कैथरीन को जन्म दिया।

जोसेफ़ की कठोर कैथोलिक परवरिश हुई। उनके पिता बहुत निष्ठावान थे और दरअसल बहुत कम सामान्य प्रोफ़ेसरों में से थे, जो जेज़ुइट धर्मावलंबियों को पढ़ाते थे। उनके पास कई विषयों का व्यापक ज्ञान था और उन्होंने अपने पुत्र में पढ़ने तथा सीखने की इच्छा जगाई।

उस वक़्त आयरलैंड आर्थिक मंदी से गुज़र रहा था और कई परिवार भूखे मर रहे थे। हालाँकि डेनिस मर्फ़ी के पास रोज़गार था, लेकिन उनकी आमदनी बस परिवार को पालने लायक़ ही थी।

जोसेफ़ को नैशनल स्कूल में दाख़िला मिला और वे एक प्रतिभाशाली विद्यार्थी थे। उन्हें पादरी बनने की शिक्षा ग्रहण करने के लिए प्रोत्साहित किया गया और वे एक जेज़ुइट धर्मसंस्था में अध्ययन करने लगे। बहरहाल, किशोरावस्था के अंतिम दौर में उनके मन में जेज़ुइट लोगों की कैथोलिक धर्मनिष्ठा पर सवाल उठने लगे और उन्होंने धर्मशिक्षण संस्था छोड़ दी। चूँकि उनका लक्ष्य नए विचारों का अन्वेषण करना और नए अनुभव हासिल करना था - एक ऐसा लक्ष्य जो वे कैथोलिक वर्चस्व वाले आयरलैंड में पूरा नहीं कर सकते थे - इसलिए वे अपने परिवार को छोड़कर अमेरिका आ गए।

वे अपनी जेब में सिर्फ़ 5 डॉलर लेकर एलिस आइलैंड अप्रवासी केंद्र पहुँचे। उनका पहला लक्ष्य रहने के लिए जगह खोजना था। वे सौभाग्यशाली थे कि उन्हें एक औषधि विक्रेता के साथ एक कमरे में रहने का अवसर मिला, जो दवाओं की स्थानीय दुकान में काम करता था।

जोसेफ़ को अँग्रेजी बहुत कम आती थी, क्योंकि उनके घर और स्कूल दोनों जगह गैलिक भाषा ही बोली जाती थी। ज़्यादातर आइरिश अप्रवासियों की तरह ही जोसेफ़ भी दैनिक मज़दूरी के काम करते थे और इतना भर कमा पाते थे, ताकि अपना पेट भर सकें और मकान का किराया दे सकें।

वह और उनके रूममेट अच्छे मित्र बन गए। जब दवा की दुकान पर एक नौकरी निकली, जहाँ उनका मित्र काम करता था, तो जोसेफ़ को औषधि विक्रेता के सहयोगी के रूप में रख लिया गया। उन्होंने फ़ार्मेसी का अध्ययन करने के लिए तुरंत एक स्कूल में नाम लिखा लिया। उनके तीक्ष्ण मस्तिष्क और सीखने की इच्छा की वजह से इसमें ज़्यादा समय नहीं लगा, जब जोसेफ़ ने पात्रता परीक्षा उत्तीर्ण कर ली और पूरे औषधि विक्रेता बन गए। अब वे इतना पैसा कमाने लगे कि अपना अलग अपार्टमेंट किराए पर ले सकें। कुछ साल बाद उन्होंने दवा की दुकान ख़रीद ली और अगले कुछ वर्षों तक सफल कारोबार चलाया।

जब अमेरिका द्वितीय विश्व युद्ध में दाख़िल हुआ, तो जोसेफ़ सेना में भर्ती हो गए और उन्हें 88वें डिवीज़न के मेडिकल यूनिट में फ़ार्मासिस्ट के रूप में काम दिया गया। उस वक़्त उन्होंने धर्म में अपनी दिलचस्पी को दोबारा जाग्रत किया और विभिन्न धर्मों का व्यापक अध्ययन शुरू कर दिया। सेना से मुक्त होने के बाद उन्होंने फ़ार्मेसी के अपने करियर को छोड़ने का निर्णय लिया। उन्होंने वृहद यात्राएँ की और अमेरिका तथा विदेशों के कई विश्वविद्यालयों में कोर्स किए।

जोसेफ़ विभिन्न एशियाई धर्मों पर मुग्ध हो गए और उनके बारे में गहराई से सीखने के लिए भारत आए। उन्होंने सारे प्रमुख धर्मों का शुरुआत से अध्ययन किया। इसके साथ ही उन्होंने प्राचीन समय से वर्तमान युग तक के महान दार्शनिकों का अध्ययन भी किया।

हालाँकि उन्होंने कुछ बहुत बुद्धिमान और दूरदर्शी प्रोफ़ेसरों के साथ भी अध्ययन किया, लेकिन जिस एक व्यक्ति ने जोसेफ़ को सबसे ज़्यादा प्रभावित किया, वे थे डॉ. थॉमस ट्रॉवर्ड, जो न्यायाधीश के अलावा दार्शनिक, डॉक्टर और प्रोफ़ेसर भी थे। डॉ. ट्रॉवर्ड जोसेफ़ के मार्गदर्शक बन गए। उनसे जोसेफ़ ने न सिर्फ़ दर्शन, धर्मशास्त्र और विधि का ज्ञान हासिल किया, बल्कि रहस्यवाद भी सीखा, ख़ास तौर पर मौसनिक ऑर्डर। वे इस ऑर्डर के सक्रिय सदस्य बन गए और आगे के बरसों में मौसनिक पंथ में स्कॉटिश राइट की 32वीं डिग्री तक पहुँच गए।

अमेरिका लौटने पर जोसेफ़ ने एक पादरी बनने और अपने व्यापक ज्ञान को जनता तक पहुँचाने का निर्णय लिया। चूँकि ईसाईयत की उनकी अवधारणा पारंपरिक नहीं थी और दरअसल अधिकतर ईसाई संप्रदायों के विपरीत थी, इसलिए उन्होंने लॉस एंजेलिस में अपना ख़ुद का चर्च स्थापित किया। शुरू में तो कुछ ही लोग आकर्षित हुए, लेकिन इसमें ज़्यादा समय नहीं लगा कि कई पादरियों के "पाप और नरक" के प्रवचनों के विपरीत आशावाद तथा आशा के उनके संदेश ने बहुत से स्त्री-पुरुषों को उनके चर्च की ओर आकर्षित करना शुरू कर दिया।

डॉ. जोसेफ़ मर्फ़ी नव विचार आंदोलन के प्रवर्तक थे। यह आंदोलन कई दार्शनिकों और गहन चिंतकों ने 19वीं सदी के उत्तरार्ध और 20वीं सदी के प्रारंभ में

विकसित किया था, जिन्होंने इस अद्भुत जगत का अध्ययन किया और जीवन को देखने के एक तरीक़े का प्रवचन दिया, लिखा और अभ्यास किया। हम जिस तरह से सोचते और जीते हैं, उसके प्रति एक अभौतिक, आध्यात्मिक और व्यावहारिक नीति को मिलाकर उन्होंने मनचाही चीज़ को हासिल करने का एक रहस्य खोजा।

नव विचार आंदोलन के प्रवर्तकों ने जीने का एक नया विचार सिखाया, जो नए तरीक़े और अधिक आदर्श परिणाम देता है। इसके अनुसार हममें अपने जीवन को समृद्ध बनाने के लिए इसका इस्तेमाल करने की शक्ति है। हम ये सारी चीज़ें तभी कर सकते हैं, जब हमें नियम मिल जाए और हम उस नियम को समझ लें, जिसे ईश्वर ने अतीत में पहेलियों में लिखा था।

ज़ाहिर है, डॉ. मर्फ़ी इस सकारात्मक संदेश को सिखाने वाले एकमात्र पादरी नहीं थे। द्वितीय विश्व युद्ध के बाद के दशकों में कई चर्च स्थापित और विकसित किए गए, जिनके पादरी और समुदाय के लोग नव विचार आंदोलन से प्रभावित थे। चर्च ऑफ़ रिलीजियस साइंस, द यूनिटी चर्च और ऐसे ही आराधना स्थल इससे मिलते-जुलते दर्शन सिखाते थे। डॉ. मर्फ़ी ने अपने संगठन का नाम द चर्च ऑफ़ डिवाइन साइंस रखा। वे अक्सर अपने जैसी सोच वाले सहकर्मियों के साथ मंच पर जाते थे और संयुक्त कार्यक्रम करते थे तथा दूसरे स्त्री-पुरुषों को अपने चर्च में आने के लिए प्रशिक्षित करते थे।

बाद के वर्षों में कई चर्च के संस्थापकों ने उनके साथ मिलकर द फ़ेडरेशन ऑफ़ डिवाइन साइंस नामक संगठन बना लिया, जो सभी डिवाइन साइंस चर्चों के लिए छत्र के रूप में काम करता है। हर डिवाइन साइंस चर्च के लीडर अधिक शिक्षा पर ज़ोर देते थे। डॉ. मर्फ़ी सेंट लुई, मिसूरी में डिवाइन साइंस स्कूल की स्थापना का समर्थन करने वाले अगुआ थे, जो पादरियों और धर्मसमुदाय दोनों को शिक्षा प्रदान करता है व नए पादरियों को प्रशिक्षित करता है।

डिवाइन साइंस पादरियों की वार्षिक बैठक में सम्मिलित होना अनिवार्य था और डॉ. मर्फ़ी उसमें प्रमुख वक्ता रहते थे। वे प्रतिभागियों को अध्ययन करने और सीखते रहने के लिए प्रोत्साहित करते थे, ख़ास तौर पर अवचेतन मन के महत्त्व के बारे में।

अगले कुछ वर्षों में मर्फ़ी के स्थानीय चर्च ऑफ़ डिवाइन साइंस के सदस्यों की संख्या इतनी बढ़ गई कि इमारत छोटी पड़ने लगी। उन्होंने एक पूर्व मूवी थिएटर द विलशायर एबेल थिएटर को किराए पर लिया। उनके प्रवचन सुनने के लिए इतने ज़्यादा लोग आते थे कि यहाँ भी वे सारे लोग हमेशा नहीं समा पाते थे, जो सुनना चाहते थे। डॉ. मर्फ़ी और उनके स्टाफ़ द्वारा आयोजित कक्षाएँ उनकी रविवारीय पूजा के अतिरिक्त थीं, जिनमें 1,300 से 1,500 लोग आते थे। इसके अलावा सेमिनार और व्याख्यान अधिकतर दिनों और संध्याओं को होते थे। चर्च 1976 तक लॉस एंजेलिस के विलशायर एबेल थिएटर में बना रहा, जब यह लगूना हिल्स, कैलिफ़ोर्निया में एक सेवानिवृत्त समुदाय के पास एक नए ठिकाने पर चला गया।

संदेश सुनने के इच्छुक लोगों की भारी संख्या तक पहुँचने के लिए डॉ. मर्फ़ी ने एक साप्ताहिक रेडियो टॉक शो बनाया, जो अंततः दस लाख से अधिक श्रोताओं तक पहुँचा।

उनके कई अनुयायी संक्षेप से ज़्यादा चाहते थे और उन्होंने डॉ. मर्फ़ी को सुझाव दिया कि वे अपने व्याख्यानों और रेडियो कार्यक्रमों को टेप करें। पहले तो वे ऐसा नहीं करना चाहते थे, लेकिन बाद में वे यह प्रयोग करने को सहमत हो गए। उनके रेडियो प्रोग्राम अतिरिक्त बड़ी 78 आरपीएम डिस्क पर रिकॉर्ड किए जाते थे, जो उस समय एक आम परंपरा थी। उन्होंने ऐसी ही एक डिस्क से छः कैसेट बनाकर उन्हें विलशायर एबेल थिएटर की लॉबी में सूचना मेज़ पर रख दिया। सारे कैसेट एक ही घंटे में बिक गए। इससे एक नया उपक्रम शुरू हो गया। बाइबल के शब्दों की व्याख्या, अपने श्रोताओं को मनन, ध्यान और प्रार्थना की सामग्री प्रदान देने वाले उनके व्याख्यानों के टेप न सिर्फ़ उनके चर्च द्वारा बेचे जाते थे, बल्कि दूसरे चर्चों, बुकस्टोर व डाक द्वारा भी उपलब्ध थे।

चर्च का विस्तार होने पर डॉ. मर्फ़ी ने पेशेवर और प्रशासकीय कर्मचारियों का स्टाफ़ रखा, ताकि कई योजनाओं में उनकी मदद ले सकें और अपनी षुरुआती पुस्तकों पर शोध करके उन्हें तैयार कर सकें। उनके स्टाफ़ की एक बहुत ही प्रभावी सदस्य उनकी प्रशासकीय सहयोगी डॉ. जीन राइट थीं। यह कामकाजी संबंध जल्द ही रोमांस में बदल गया और उनका विवाह हो गया - एक आजीवन साझेदारी, जिसने उन दोनों के जीवन को समृद्ध किया।

उस वक़्त (1950 के दशक में) आध्यात्मिक प्रेरणा वाली सामग्री के बड़े प्रकाशक बहुत कम थे। मर्फ़ी ने लॉस एंजेलिस इलाक़े के कुछ छोटे प्रकाशकों को खोजा और उनके साथ छोटी पुस्तकों की एक श्रृँखला निकाली (अक्सर 30 से 50 पेज की, जिन्हें पैंफ़लेट के रूप में छापा गया था), जो अधिकतर चर्चों में 1.50 से 3 डॉलर में बिकती थीं। जब इन पुस्तकों की माँग इस सीमा तक बढ़ गई कि दूसरे और तीसरे रीप्रिंट की नौबत आई, तो महत्त्वपूर्ण प्रकाशक समझ गए कि ऐसी पुस्तकों का बाज़ार है और उन्होंने इन्हें अपने कैटलांग में शामिल कर लिया।

डॉ. मर्फ़ी अपनी पुस्तकों टेपों आैर रेडियो प्रसारणों की बदौलत लॉस एंजेलिस के बाहर भी मशहूर हो गए तथा उनके पास देश भर से व्याख्यान के आमंत्रण आने लगे। उन्होंने अपने व्याख्यान सिर्फ़ धार्मिक मसलों तक ही सीमित नहीं रखे, बल्कि जीवन के ऐतिहासिक मूल्यों, स्वस्थ जीवन की कला और महान दार्शनिकों की शिक्षाओं पर भी संदेश दिया - पाश्चात्य और पूर्वी संस्कृतियों दोनों के।

चूँकि डॉ. मर्फ़ी ने कभी गाड़ी चलाना नहीं सीखा था, इसलिए उन्हें यह व्यवस्था करनी थी कि कोई उन्हें उन जगहों पर ले जाएँ, जहाँ व्याख्यान देने का आमंत्रण उन्हें दिया जाता था और उनकी अति व्यस्त समय-सारणी की दूसरी जगहों पर भी ले जाए। उनकी प्रशासकीय सहयोगी और बाद में उनकी पत्नी के रूप में जीन का एक काम डॉ.

मर्फ़ी के कामों की योजना बनाना, ट्रेन या फ़्लाइट की बुकिंग करना, हवाई अड्डे पर कार से लेना, होटल व्यवस्था करना और यात्रा के अन्य सारे विवरण तय करना था।

मर्फ़ी दंपत्ति संसार के कई देशों में अक्सर यात्रा करते थे। उनकी प्रिय कामकाजी छुट्टियाँ समुद्री पर्यटन जहाज़ों पर सेमिनार आयोजित करना था। ये यात्राएँ एक सप्ताह या इससे लंबी चलती थीं और उन्हें संसार के कई देशों में ले जाती थीं।

डॉ. मर्फ़ी की एक बहुत पुरस्कारदायक गतिविधि कई जेलों के कैदियों से बातचीत करना था। कई पूर्व-अपराधियों ने बरसों तक उन्हें पत्र लिखे और बताया कि किस प्रकार उनके शब्दों ने उनके जीवन का कायाकल्प कर दिया और उन्हें आध्यात्मिक व सार्थक जीवन जीने के लिए प्रेरित किया।

उन्होंने अमेरिका के अलावा यूरोप व एशिया के कई देशों की यात्राएँ कीं। अपने व्याख्यानों में वे एक ईश्वर, "मैं हूँ," में विश्वास पर आधारित जीवन सिद्धांतों और अवचेतन मन की शक्ति को समझने के महत्त्व पर ज़ोर देते थे।

डॉ. मर्फ़ी की पैंफलेट के आकार की पुस्तकें इतनी लोकप्रिय थीं कि वे उन्हें अधिक विस्तृत और ज़्यादा लंबी पुस्तकों में बदलने लगे। उनकी पत्नी ने हमें उनके लिखने के तरीक़े के बारे में बताया है। उन्होंने बताया कि वे अपनी पांडुलिपियाँ एक तख़्ती पर लिखते थे और अपनी पेंसिल या पेन इतनी कसकर दबाते थे कि आप अगले पेज पर उसकी छाप से ही पूरा पेज पढ़ सकते थे। लिखते समय वे तंद्रा में नज़र आते थे। उनकी लेखन शैली उनके ऑफिस में चार से छह घंटे तक बिना विचलित हुए लिखने की थी, जब तक कि वे रुक नहीं जाते थे और कहते थे कि आज के लिए काफ़ी हो गया। हर दिन एक जैसा रहता था। उन्होंने जो शुरू किया था, उसे पूरा करने के लिए वे अगली सुबह से पहले कभी दोबारा ऑफिस नहीं जाते थे। जब वे काम करते थे, तब कोई भोजन या पेय नहीं लेते थे। वे अपने विचारों और पुस्तकों के विशाल संग्रह के साथ अकेले रहते थे, जिनसे वे समय-समय पर संदर्भ देखते थे। उनकी पत्नी उन्हें आगंतुकों और फ़ोन कॉल से बचाती थीं तथा चर्च व अन्य गतिविधियों को सुचारु रूप से चलाती रहती थीं।

डॉ. मर्फ़ी हमेशा उन मुद्दों पर चर्चा करने और उन बिंदुओं को समझाने के एक सरल तरीक़े की तलाश कर रहे थे, जो विस्तार से बताएँ कि यह व्यक्ति को कैसे प्रभावित करता है। उन्होंने अपने कुछ व्याख्यान कैसेट, रिकॉर्ड या सीडी पर पेश करने का चुनाव किया, जब ये प्रौद्योगिकियाँ विकसित हुईं और आडिओं के क्षेत्र में नए तरीक़े उभरे।

सीडी और कैसेट का उनका पूरा काम वे साधन हैं, जिनका इस्तेमाल अधिकतर समस्याओं के लिए किया जा सकता है, जो जीवन में इंसान के सामने आती हैं। इरादे के अनुसार लक्ष्य हासिल करने के ये तरीक़े समय के इम्तिहान में खरे उतरे हैं। उनकी

बुनियादी विषयवस्तु यह है कि समस्या का समाधान इंसान के भीतर निहित है। बाहरी तत्व किसी की सोच नहीं बदल सकते। यानि, आपका मन आपका ख़ुद का है। बेहतर जीवन जीने के लिए आपको बाहरी परिस्थितियों को नहीं, बल्कि अपने मन को बदलना होगा। आप अपनी ख़ुद की तक़दीर बनाते हैं। परिवर्तन की शक्ति आपके मन में है और अपने अवचेतन मन का इस्तेमाल करके आप बेहतरी के ये परिवर्तन कर सकते हैं।

डॉ. मर्फ़ी ने 30 से अधिक पुस्तकें लिखी हैं। उनकी सबसे मशहूर पुस्तक द पावर ऑफ़ ऑफ़ सबकांशस माइंड 1963 में प्रकाशित हुई और तुरंत बेस्टसेलर बन गई। इसे सर्वश्रेष्ठ स्व-सहायता पुस्तकों में से एक क़रार दिया गया। इसकी लाखों प्रतियाँ बिक चुकी हैं और अब भी पूरे संसार में बिक रही हैं।

उनकी कुछ अन्य बेस्टसेलिंग पुस्तकों में शामिल थीं: टेलीसाइकिक्स - द मैजिक पावर ऑफ़ परफ़ेक्ट लिविंग, द अमेज़िंग लॉज ऑफ़ कॉस्मिक माइंड, सीक्रेट्स ऑफ़ द आई-चिंग, द मिरेकल ऑफ़ माइंड डाइनैमिक्स, ऑफ़ इनफ़िनिट पावर टु बी रिच और द कॉस्मिक पावर विदिन यू।

डॉ. मर्फ़ी का देहांत दिसंबर 1981 में हो गया और इसके बाद उनकी पत्नी डॉ. जीन मर्फ़ी ने उनकी विरासत को जारी रखा। 1986 में उन्होंने एक व्याख्यान में अपने स्वर्गीय पति का उद्धरण देते हुए उनके दर्शन को दोहराया:

> मैं पुरुषों और स्त्रियों को उनका दैवी उद्गम बताना चाहता हूँ और उनके भीतर मौजूद शक्तियों के बारे में भी। मैं यह जानकारी देना चाहता हूँ कि यह शक्ति उनके भीतर है और वे अपने ख़ुद के सहायक हैं और अपनी मुक्ति हासिल करने में ख़ुद सक्षम हैं। यही बाइबल का संदेश है और आज हमारी नब्बे प्रतिशत दुविधा इस कारण है, क्योंकि हमने बाइबल के जीवन बदलने वाले सत्यों की ग़ल त, शाब्दिक व्याख्या कर ली है।
>
> मैं बहुसंख्यक लोगों, सड़क के आदमी को, उस औरत को जो कर्तव्य के बोझ से दबी जा रही है और अपने गुणों तथा योग्यताओं को दमित कर रही है तक पहुँचना चाहता हूँ; मैं हर अवस्था या चेतना के स्तर पर मौजूद दूसरे लोगों की मदद करना चाहता हूँ, ताकि वे मन के चमत्कार सीखें।

उन्होंने अपने पति के बारे में कहा: वे व्यावहारिक संन्यासी थे, उनमें विद्वान की बौद्धिकता थी, सफल प्रबंधक का दिमाग़ था, कवि का हृदय था। उनका संदेश सार रूप में यह था: "आप सम्राट हैं, अपने संसार के शासक हैं, क्योंकि आप ईश्वर के साथ एक हैं।"